सन्तानहीन, चित्त की भ्रान्ति, शिरःशूल, ज़ुकाम, नज़ला, मूत्राशय, आमाशय, वृकद्वय, हृदय, शिर, मस्तिष्क, यकृत की निर्बलता, तन्द्रा, सन्धिवात, नेत्रों में झपकी, स्वप्नदोष, शुक्रमेह, प्रमेह, इत्यादि रोग प्रायः आ दबाते हैं ॥

स्मरण रक्खो कि पृथक २ प्रकृतियों पर हस्तमैथुन का पृथक २ प्रभाव पड़ता है। हम को जो सैंकड़ों पत्र इस विषय में प्राप्त होते रहते हैं, उन से हम ने यह फैसला किया है, कि ऐसे मनुष्य भी हैं, जो वर्षों तक लगातार हस्तमैथुन या बहुमैथुन करते रहे हैं, परन्तु उन को इतनी हानि नहीं पहुंची, जितनी कि उन मनुष्यों को पहुंची कि जो दो चार मास हस्तक्रिया करते रहे। हम ने ऐसे मनुष्य भी देखे कि जिन्होंने दो चार वार हस्तक्रिया की थी और पश्चात् वह स्त्री प्रसंग के योग्य न रहे। जिन लोगों के पट्ठे (स्नायु) कमज़ोर होते हैं उन पर शीघ्र और गहरा प्रभाव होता है, और वह थोड़ी सी अनुचित क्रिया करके भी सारी आयु के लिए बरबाद हो जाते हैं, प्रकृति के विचार से अधिक उष्ण प्रकृति वाले बाह (मैथुन) के विषय में बहुत मज़बूत होते हैं, और उसके आगे गर्म खुश्क, सर्दतर और सर्द खुश्क प्रकृतियां समझें। सर्द खुश्क प्रकृति सब से अधिक निर्बल होती है बिना किसी ज्यादती के भी उसकी बाह (मैथुन शक्ति) बहुत कमज़ोर होती है। यदि किसी दुराचार में वह ग्रस्त हो जावे तो फिर क्या कहना है। ऐसे लोग अपनी मैथुन शक्ति की वृद्धि के लिए व्यर्थ परिश्रम करते रहते हैं। स्वाभाविक शक्ति से कैसे बढ़ सकते हैं।

शोक तो यह है, कि स्त्री पुरुष दोनों में यह बुरा व्यसन वर्तमान है। डाक्टर फुट साहिब ने दो लड़कियों का वर्णन किया है कि जो हर प्रकार की निर्बलता में ग्रस्त थी। उन का पिता ज डाक्टर साहिब के पास चिकित्सा के निमित्त आया, तो उस रोगवृत्तान्त सुना, और पीछे उन लड़कियों को गुप्त पत्र लिखा।

क्या तुम इस बुरे व्यसन में ग्रस्त हो, बेचारी लड़कियों ने अपना दोष स्वीकार किया, फिर डाक्टर की आज्ञा से उन्होंने इस बुरे व्यसन को त्याग दिया, इस का फल यह हुआ, कि सम्पूर्ण व्याधियां, रोम रोम निद्रानाश, पट्ठों की निर्बलता आदि सब दूर हो गई। यह बड़ी मूर्खता है, कि लोग वैद्य के पास जाकर असल रोग को प्रगट नहीं करते और यह कहते हैं, मेरा यकृत निर्बल है, या मुझ को प्रमेह है, या आंखें निर्बल हैं, या शिरःशूल है, या मैं दुर्बल होता जाता हूं। भोला डाक्टर उन के कथनानुसार इन्हीं रोगों का इलाज करने लग जाता है, मूल कारण हस्तमैथुन, अथवा बहुमैथुन दूर नहीं किया जाता। सम्भव है कि रोगी इस महा हानि कारक व्यसन प्रभाव को न जानता हो, किन्तु यह सम्पूर्ण रोगों का घर है। कामवरति शास्त्र तृतीय भाग में इस का वर्णन भली प्रकार करेंगे, अतः चिकित्सक को चाहिये कि अच्छी तरह पूछ करके मूल कारण को दूर करे॥

कतिपय डाक्टरों की सम्मतियां।

डाक्टर डैसेलैगड—एक ऐसे पुरुष के विषय में लिखते हैं के जिसे सई (तपेदिक) हो गया था, और इस दशा में भी यदि उसे अकेला छोड़ दिया जाता तो वह हस्तमैथुन कर बैठता था। परिणाम यह हुआ कि तीन मास के पश्चात् मर गया॥

एक डाक्टर—लिखता है, कि एक युवक अपना मूत्र परीक्षार्थ लाया और परीक्षा से ज्ञात हुआ कि वह पथरी रोग में ग्रस्त है। उस ने १६ साल की आयु से लेकर १९ वर्ष की आयु तक हस्तमैथुन किया था। उस की शारीरिक अवस्था महा रद्दी थी। बहुत से डाक्टरों ने हस्तकार पागलों का वर्णन किया है। अमरीका के एक धनाढ्य पुरुष का लड़का हस्तक्रिया से पगला हो गया। इसी प्रकार एक पादरी का लड़का जिस ने पाठशाला में बहुत अधिक हस्तमैथुन किया था पगला हो गया। पागलखानों में बहुधा पागल हस्तकार

होते हैं। डाक्टर बाइनल एक चित्रकार का वर्णन करते हैं, कि उस ने सारी निपुणता हस्तमैथुन के द्वारा नष्ट करदी थी और अन्त में पगला हो गया था॥

डाक्टर एनीवर्ट ने एक लड़की का वृत्तान्त लिखा है, कि वह बकरियां चराया करती थी, स्वतन्त्रता के कारण वह दो वर्ष तक खूब हस्तमैथुन करती रही। जिस के कारण उस की कामवासना बहुत प्रबल हो गई थी। किञ्चित् कारण से भी उस की कामाग्नि प्रचण्ड हो जाती थी, और वह विवश होती थी। उस का शिर और छाती आदि सर्व अंग बहुत दुर्बल हो गए थे। अन्त में यहां तक नौबत पहुंची कि केवल पुरुष के देखने, अथवा उस के स्पर्श हो जा[ने] से उस की प्रवृत्ति भड़क उठती और स्खलित हो जाती। अन्त में हस्पताल लाई गई परन्तु उस के वास्ते कुछ नहीं हो सका था वापिस अपने घर भेजदी गई जहां पहुंचते ही थोड़ी देर पीछे मर गई॥

हस्तकार अन्त में इतना दुर्बल हो जाता है कि बाज़ समय एक ही बार के भोग करने से मर जाता है। डाक्टर एन्डराब एक ऐसे मनुष्य का वर्णन करता है, कि जिस का एक वेश्या के घर [में] भोग के पीछे तुरन्त मूर्छा हो गई थी, और वह उसी दशा में हस्पताल लाया गया था॥

डाक्टर सैरस्स—एक ऐसे ही मनुष्य का वर्णन करता है जो हस्तमैथुन के साथ बहुमैथुन भी करता था। एक दिन वह वेश्[या] के घर में सारा दिन रहा और सायम को मूर्छित होगया, औ[र] तीसरे दिन मर गया॥

डाक्टर गीयोट—(Guiot) एक ५२ वर्ष के मनुष्य [का] ज़िकर करता है जो इस बुरे व्यसन के कारण पागल होगया। उ[स] की इन्द्री बहुत बड़ी थी और वह हर समय कामातुर रहता था॥

स्मरण रक्खो कि बलवान अपने आप को वश में रख सकता है, परन्तु हस्तमैथुन कर्ता तुरन्त कामातुर हो जाता है ॥

डाक्टर डैसेल्यराड—(Deseland) ने एक लड़की का वर्णन किया है, जिसे छोटी आयु में ही हस्तमैथुन का व्यसन पड़ गया था। और अन्त में उस की रुचि इतनी बढ़ गई थी कि वह विवश होकर बाजार में बैठ गई, और उस दशा में भी हस्तक्रिया को न छोड़ सकी, परिणाम यह हुआ, कि मृत्यु ने ही उस को इस व्यसन से छुटकारा दिया ॥

डाक्टर सैस्वरियर—(Scrurier) एक मनुष्य का वर्णन करते हैं, कि हस्तमैथुन के कारण उस के शरीर में केवल हड्डियों का ढांचा ही शेष रह गया था, आंखें अन्दर को धसी हुई और लगभग अन्धी थीं, हकलापन, और दन्त निर्बल थे, निदान वह इतना दुर्बल होगया कि हिल न सकता था। ६ मास तक इस दशा में रह कर मर गया ॥

डाक्टर टिस्सट—(Tissot) एक घड़ीसाज का वृत्तान्त लिखते हैं, कि यह पहिले बहुत निपुण और स्वस्थ था। परन्तु १७ वर्ष की आयु में उस ने हस्तमैथुन आरम्भ किया, कोई दिन न छुटता था, किसी २ दिन २, ३ वार तक कर बैठता था। निदान उस का मस्तिष्क (दिमाग) इतना निर्बल होगया, कि जब वह हस्तक्रिया करता तो पीछे मूर्छित होजाता। शिर पीछे की ओर लटक जाता ग्रीवा फूल जाती। यह मूर्छा दशा दिनों दिन बढ़ती गई, परन्तु यह मूर्ख तब भी न समझा, और उसकी काम उत्तेजना इतनी बढ़ गई, कि किञ्चित् छूने से भी वीर्य्य पात होजाता। स्त्री को देखते ही वीर्य्य निकल जाता, निदान यह ८ से १२ घण्टे तक मूर्छित रहने

लगा। इस दशा में कुछ खा पी नहीं सका था। कटि में असह्य पीड़ा होती थी, दुर्बलता इतनी बढ़ गई थी, कि वह मुर्दह सा मालूम होता था। रंग पीला, काम काज के अयोग्य, मुंह से लार और नाक से खून बहता था, पेचिश भी आरम्भ होगई और प्रत्येक दस्त के साथ वीर्य्य भी टपकता था। श्वास लेना दूभर होगया, कहां तक उस के दुःखों का वर्णन किया जाय, महा कष्ट भोग कर और देखने वालों को शिक्षा देकर मर गया॥

डाक्टर जिमरमैन—(Gimmerman) एक मनुष्य का जिस को पहले हस्तमैथुन से मृगी का रोग हुआ, और पश्चात् मृत्यु आई वर्णन करते है। डाक्टर एक्टन (Acton) हस्तकार के लक्षण इस प्रकार लिखते हैं :—"रंग पीला, दुबला, और एक निर्बल कदर्य्य रूप का होजाता है। आंखें भीतर धंस जाती हैं, पुतलियां फैल जाती हैं, कायरता इस का आवश्यक फल है। हस्तकार दूसरे मनुष्य के साथ आंख तक नहीं मिला सका। लज्जामान, और एकान्त प्रिय हो जाता है, यदि कोई बालक अच्छी स्मरण शक्ति रखता हो, और फिर विस्मृति का रोग हो जाय तो जानलो कि वह हस्तकार होगया॥

फिर वह लिखता है, कि इस दुर्व्यसन से नवयुवक बूढ़े, मुखपीत, सुस्त मूर्ख, नपुन्सक, कटि झुकी हुई, अधरंग और मन्दाग्नि वाले हो जाते हैं॥

डाक्टर हाफमैन साहिब—का कथन है, कि हस्तकार को स्वप्नदोष, शिर तथा कटि में पीड़ा, दृष्टि व स्मरण शक्ति हीनता, आत्मिक, शारीरिक, और मान्सिक निर्बलता, बुरे भयंकर स्वप्नों का आना, दिमागी चक्कर, कितनों को पागलपन, कितनों को गंठिया, कितनों को आमाशय और छाती की वेदना हो जाती है। वीर्य्य बिना इच्छा बहने लगता है। इन्द्री निकम्मी हो जाती है, शीघ्रपतन, स्व- और अन्त में पूर्णतः नपुन्सक (नामर्द) बन जाता है॥

डाक्टर टिसट—(Tissot) का कथन है, कि और बहुत सी खराबियों के भिन्न एक यह बहुत बड़ी खराबी है कि मनुष्य स्त्री भोग के योग्य नहीं रहता, और बाज़ों को चैतन्यता नहीं होती, अथवा अपूर्ण होती है, अथवा होकर शीघ्र ही मिट जाती है । चैतन्यता होते ही, या स्त्री के आलिंगन आदि करते ही, या केवल विचारों के उत्पन्न होते ही धातु निकलना आरम्भ हो जाती है ॥

डाक्टर समिथ— ।है, क्षई रोग (तपादिक) के एक हज़ार रोगियों में से प्रायः १८६ के रोग का कारण बहु मैथुन था, १८३ रोगियों का कारण हस्तमैथुन था, २२० रोगियों का स्वप्नदोष व शुक्रपतन था, अन्य और कारणों से रोगी थे । २२८ पागलों में २४ मनुष्य केवल हस्तमैथुन से पागल हुए थे । वास्टर के पागलखाना के १९९ पागलों में ४२ केवल हस्तमैथुन से इस दुर्वस्था को पहुंचे थे ॥

डाक्टर मिलर (Miller) ने अत्यन्त स्पष्ट रूप से मैथुन की बुराइयों का वर्णन किया है । जो इस साधारण पुस्तक में नहीं आसक्तीं । संक्षिप्त लिखते हैं :—

लिंगेन्द्री की खराबियां ॥

अण्डकोश लटक जाते हैं । बाज़ समय उन में पीड़ा होती है । लिङ्गेन्द्री में सरसराहट प्रतीत होती है । उत्तेजना कम, शीघ्रपतन, बिना आनन्द स्वप्नदोष, प्रमेह, नपुंसकता हो जाती हैं । रुचि सर्वथा नहीं होती । यदि कुछ होती भी है तो प्रविष्ट करते ही वीर्य्य निकल कर लज्जा का सामना होता है ॥

आमाशय की खराबीयां—कोष्टबद्धता (कबज) सदैव होती है । कभी पेचिश भी हो जाती है । स्मरण रहे कि इस कोष्टबद्धता का इलाज रेचक गोलियों से न करना चाहिये, यदि आव-

श्यकता हो तो मलभेदकवटी भी दें, परन्तु अधिकतर व्यायाम करना और असल कारण को दूर करना, और पुष्टी दायक औषधियां खाना, फलों का अधिक सेवन करना, इस का इलाज है ॥

हस्तमैथुन—से मूत्राशय मसाना निर्बल होजाता है, मूत्र बार बार आता है, स्तम्भन नहीं होता, गुर्दे के रोग या प्रमेह या ब्राइट डिज़ीज़ (bright-disease) (पेशाब कम और शरीर पर शोथ आरम्भ होजाता है) क्षुधा कम होजाती है, पाण्डु, उद्गार, यकृत की निर्बलता, धड़का, जलन, घोर मन्दाग्नि, कमज़ोरी, दन्तरोग, वलिपलितरोग, बालझड़, जुकाम, कुरूपता, आंखों का धसना, उन्माद, निदान क्षई होकर मर जाता है ॥

पृष्ठवंश—(रीढ़ की हड्डी) के रोगः—अधो भाग में शूल, कटि में शूल, टांगों की निर्बलता, प्रायः निचले भाग में अधरंग हो जाता है। डाक्टर साहिब लिखते हैं, कि मृगी और मूर्छा के रोगी बहुधा हस्तकार ही हुआ करते हैं। एक बार एक बालक को स्कूल में मृगी आरम्भ होगई। उस के माता पिता उस का कारण परिश्रम समझते थे, परन्तु मैंने ध्यान रखना आरम्भ किया, और उसे पकड़ा और समझाया, किन्तु वह मूर्ख इस कुक्रिया को त्याग न सका, निदान पागल खाने में भेजा गया और वहां मर गया ॥

मस्तिष्क विचारः—मस्तिष्क निर्बल, चित्त का भ्रमयुक्त होना, हर समय बुरी चिन्ताओं में प्रवृत रहना, चित्त का स्थिर न होना, मन को अपने वश में न रख सकना, दृष्टि शक्ति, श्रवण शक्ति हीन, सर्व इन्द्रियां निर्बल, स्वर भद्दा, टूटा फूटा, कानों में शांय २, स्वभाव चिड़ चिड़ा, शारीरिक और मानसिक दुर्बलता बनी रहती है। और फिर दुष्ट कामनाओं का दास बन जाता है। आज समय आत्मघात कर लेता है। विद्यार्थियों को जब अत्यन्त दुर्बल देखो तो

उसका कारण बहुत परिश्रम न समझो। बाज़े लड़कों को तो स्कूल ही छोड़ना पड़ता है, लोग कहते हैं, इस ने बड़ा परिश्रम किया है, किन्तु नहीं॥

पाठक गण !

इस ने दूसरी ओर बी० ए० पास कर लिया है, अब पढ़ने की आवश्यकता ही क्या है, अस्तु कहां तक वर्णन किया जाय, हस्त मैथुन की इतनी बुराइयें हैं, कि उसके सविस्तर वर्णन के लिए एक बड़े ग्रन्थ की आवश्यकता है जो लिखा जारहा है॥

हमारे पास इसके बुरे परिणाम के इतने पत्र आते हैं, कि यदि उन सब का वर्णन किया जाय तो एक भारी ग्रन्थ हो जाय और प्रत्येक पढ़ने वाला एक २ पत्र को पढ़ कर हैरान हो जाय। सारा संसार इस बुरी क्रिया से व्याकुल है। एक बार एक नवयुवक को देख कर तो मेरे रोंगटे खड़े होगए। एक रोगी की चिकित्सा के लिए मैं गया हुआ था, वहां मैंने देखा कि वह २० कदम भी न चल सकता था, तुरन्त श्वास चढ़ने लगता था, उसकी दुर्बलता इतनी बढ़ी हुई थी कि उसका जीना आश्चर्य मालूम होता था। उस ने बताया कि ८ वर्ष की आयु से लेकर १७ वर्ष की आयु तक इतना हस्तमैथुन किया कि कई बार तो ३-४ बार दिन में किया करता था १५ वर्ष की आयु में विवाह हुआ १९ वर्ष की आयु में पक्षाघात (अधरंग) हुआ, २२ साल की आयु में फिर अधरंग का आक्रमण हुआ, २३ साल की आयु में फिर दौरा हो गया, ए पेचिश आरम्भ हुई, २९ साल की आयु में घोर धड़का आरम्भ हुआ, और इस समय इस को श्वास रोग, यकृत की वृद्धि, मन्दाग्नि, पेट में भारीपन और बोझ, यकृतशूल, कटिशूल, गुरदे की [illegible] और दर्द, पिंडुलियों में दर्द, पेट में दर्द, स्मरण शक्तिहीन, दुर्बलता इत्यादि

रोग थे, नख से शिख तक वह दुर्बल था। और मेरे देखने के थोड़े महीनों के पीछे उस का देहान्त हुआ। आज कल ऐसा समय आगया है, कि सैकड़ों पीछे ९९ इस दुर्व्यसन के शिकार हैं, फिर क्यों न प्रत्येक जन धातु पुष्टि की औषधियां ढूंढता फिरे॥

लड़कों से प्राकृतिक नियम के विरुद्ध व्यभिचार करनेकी भी ऐसी ही हानियां हैं। प्रत्युत इस में भी अधिक हैं इस लिए उसका पृथक वर्णन नहीं किया गया। यह प्रकृति नियम वरुद्ध निस्संदेह भारी पाप है॥

—०—

बहु मैथुन।

हिन्दू शास्त्रों में लिखा है कि तरुण पुरुष और स्त्री का जब विवाह हो, और स्त्री ऋतुस्नान से शुद्ध हो तो पुरुष केवल एक वार गर्भाधान करे। और गर्भ स्थित होन के पश्चात् जब तक बालक उत्पन्न होकर माता का दूध पीना न छोडे तब तक दोनों भोग करने से बचे रहें। इस विधि से मानो ढाई वर्ष में एक बार नौबत पहुंचती है। खैर यह तो हुई धर्मशास्त्र की आज्ञा। हमें अपने पाठकों को यह कर्णगोचर करना है, कि कितन दिनों के पीछे भोग किया जाय, जिस में स्वास्थ्य में कोई फर्क न आवे। उपर्युक्त नियम बहुत उत्तम हैं, परन्तु मनुष्यों की दशा आज कल बहुत गिरी हुई है॥

बहुमैथुन—हमारे देश में इतना बढ़ गया है, कि जिस का करना असम्भव है। एक बार मैंने एक महाशय के पत्र को पढ़ कर दांतों में उंगली दबाई, उस पत्र में लिखा था, "कि सात आठ साल तक मैं लगातार ५, ६ दफा दैनिक भोग करता रहा" मैं सोचने लगा, कि इतना ब पुरुष और खुराक खाने वाला यदि किञ्चितभी अपने आप को रोकता तो आज इस को मेद तक आने

की क्या आवश्यकता पड़ती ? अपने धन से वह संसार को हैरान करता ।

बहुमैथुन—ने भारतवासियों का सत्यानाश कर दिया है। स्त्री के मासिक रजोधर्म के दिनों में, या बीमारी के दिनों में, वेश्याओं से मुंह काला करते हैं, और प्रायः रजस्वला की भी परवाह नहीं करते। बड़े २ शुद्धाचारी कहलाने वाले उपदेशक महाशय व दूसरी स्त्री की ओर दृष्टि भी न करने वाले अपने घर में बहुमैथुन से नहीं रुकते ॥

एक डाक्टर साहब लिखते हैं:—शोक ! कि कितने विवाहित जोड़े हैं जिनका स्वास्थ्य भोग के नियमों की अज्ञानता से तबाह और बरबाद हो चुका है। बिना किंचि सोचने के वह क्या कर रहे हैं ?

वह असावधानी से अपनी रुचियों की बागडोर ढीली छोड़ देते हैं, और पागलपन से दुःख और शोक की ओर जाते हैं ॥

बाज लोग इस मूर्खता के कारण बहुमैथुन करते हैं, कि कहीं स्त्री यह न समझ ले कि इन में वल नहीं है। मूर्ख यह नहीं जानते कि जब बहुमैथुन के कारण न मर्द हो जावेंगे तो उस समय सर्वथा ही इच्छा पूरी न कर सकेंगे, फिर क्या होगा। यहां यह लिखना आवश्यक मालूम होता है कि स्त्री बहुमैथुन से कभी प्रसन्न नहीं होती है। बहुमैथुन से वह घृणा करती है। पूर्ण स्खलित होना इस के लिए अत्यन्त आनन्द का हेतु है, और दैनिक कोई स्त्री स्खलित होती नहीं, यदि हो तो थोड़े काल में मुर्दा होजावे। १४ दिन पीछे एक बार प्रसन्न करने वाले को दैनिक ४ बार अपना आप गवाने वाले की अपेक्षा अधिक पसन्द करती है ॥

शरीर का सार वीर्य है। रुधिर की सं बून्द के बराबर वीर्य की एक बून्द होती है। वह ऐसा अमोल रत्न है कि इस से शरीर

उत्पन्न होता है। इस को बरबाद करना किसी मूर्खता का काम है। रिसाला वीर्य्य कीपर ॥=) में हमारे यहां से मंगाकर पढ़ें। डाक्टर कारपेन्टर (Carpenter) साहिब लिखते हैं, कि बहुमैथुन से पट्ठों की क्रिया बार २ होने से स्वास्थ्य को हानि पहुंचाने वाले हेतु उत्पन्न होते हैं॥

डाक्टर एकटन (Acton) साहिब ने अच्छी तरह दिखाया है, कि मैथुन का प्रभाव अवश्य पट्ठों के द्वारा मस्तिष्क तक पहुंचता है। और दुर्बल जन प्रायः इस आघात से मर भी जाते हैं। देखिए! कि ससा (खरगोश) स्खलित होने के पश्चात् एक ओर को गिर पड़ता है। मैथुन से बल नष्ट होता है, और पट्ठों को आघात पहुंचता है, शारीरिक और आत्मिक बल तथा ओज निकल जाते हैं। तब आप समझ सकते हैं कि बहुमैथुन कितना हानिकारक होता है॥

बहुमैथुन की कहानियां।

डाक्टर एकटन साहिब लिखते हैं, कि जीवन दायक रत्न का अधिकता से निकलते रहना और प्रसङ्ग से उत्पन्न हुए पट्ठों के जोश का बार २ होना बहुत ही हानिकारक है। प्राय नियम से रहने वाले स्त्री पुरुष भी विवाह होते ही दैनिक मैथुन आरम्भ कर देते हैं, और उस समय तक करते रहते हैं, जब तक कि बीमारी उन्हें विवश नहीं कर देती। वह इलाज करवाते हैं, वैद्य उन के साधारण रोग का इलाज करता है, बहुमैथुन के विषय में एक प्रश्न भी नहीं पूछता, और न ही बचे रहने की आज्ञा करता है। निदान मन्दाग्नि, पट्ठों की निर्बलता, आदि रोगों से उस को आराम नहीं आता है। यदि रोगी किसी ऐसे डाक्टर के पास आवे जो कि उस को बता दे कि यह समस्त रोग बहुमैथुन के कारण हैं, तो वह विस्मित होता है। बलवान् पुरुष को पहिले पहल बड़ी भारी खराबी नहीं होती और इस पर वह समझते हैं, कि इस से कोई हानि न होगी, परन्तु शीघ्र

नहीं तो कुछ देर में उस को इस का फल अवश्य भुगतना पड़ता है। बाज रोगों का कारण हम लोगों को मालूम न होता था, अब निश्चय हो गया है कि उन रोगों का कारण बहुमैथुन है।

अरस्तू ने एक बार सिकन्दर को लिखा था, " कि काम उत्तेजना के वशीभूत न हो, यह प्रकृति शूकर की है " ॥

मुफर्रहउलकलूब (यूनानी पुस्तक) में लिखा है, बहुमैथुन सब से अधिक हानिकारक है और बहुभोग से यह खराबियां उत्पन्न होती हैं:—पट्ठों की निर्बलता दृष्टि शक्ति की हीनता, प्रमेह स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, पीठ में दर्द, धड़का, मस्तिष्क की निर्बलता, यकृतशूल अजीर्ण, शरीर का दुर्बल होना, व्याकुलता, सन्तान का न होना या दुर्बल होना, धातु का पानी के सदृश पतला होना, कुरूपता, चेहरे पर मुर्दापन, नेत्रों में अशोभा, और प्रत्येक काम से जी उकताना, किसी से बात करने को जी न चाहना, आखों से पानी जाना, दर्द सिर निरन्तर, नजला, जुकाम मूत्राशय की निर्बलता, आमाशय की निर्बलता, बृक्क की निर्बलता, यकृत की निर्बलता, हृदय की निर्बलता और स्मरण शक्ति की हीनता इत्यादि " ॥

किसी ने सत्य कहा है:—"धातु शक्ति है, शक्ति ही जीवन है, शक्ति ही तरुणाई है, शक्ति की कमी बुढ़ापा है, और शक्ति का ही नाश मृत्यु है" ॥

डाक्टर फुट साहिब का कथन है —"कि बहुमैथुन स्त्री को कम और पुरुष को अधिक हानि पहुंचाता है। क्यों कि पुरुष के बहुमैथुन में स्त्री भाग नहीं लिया करती। एक और डाक्टर साहिब लिखते हैं कि बहुमैथुन से ऐसे बुरे फल पैदा होते हैं जिनसे स्त्री और पुरुष दोनों का नाश होजाता है। स्त्री पुरुष इसके स्थान में कि संसारिक सुखों को उपभोग करके पूरी आयु को पहुंचते, थोड़ी

आयु में ही संसार से चल बसते हैं। यह बात अधिक व्याख्या की मुहताज नहीं है॥

कितने समय पश्चात् भोग करना चाहिये॥

अब इस स्थान पर   क प्रतीत होता है, कि बहुमैथुन और उचित मैथुन की कोई सीमा नियत की जाय, जिससे मनुष्य उचित सीमा के अन्दर रहकर बहुमैथुन से बच सके। वैद्यक चिकित्सा ग्रन्थों में लिखा है, कि स्वस्थ और बलवान् पुरुष को प्रति चौथे दिन मैथुन करना चाहिए, लेकिन ग्रीष्मऋतु के दो महिनों में हर पन्द्रहवें दिन इस क्रिया को करना उचित है। अब इस सिद्धान्त पर अच्छी तरह विचार करना चाहिये कि वह आज्ञा युवा तन्दुरुस्त और बलिष्ठ आदमी के वास्ते है। मानो युवा, से भी युवा स्वस्थ से भी स्वस्थ, दृढ़ से भी दृढ़, आदमी को अपना जीवन और स्वास्थ्य स्थिर रखने के वास्ते इन नियमों का पालन करना चाहिये। तब महाशयो! ज़रा सोचने की बात है कि सप्ताह में दो बार जब स्वस्थ और बलवान् के वास्ते आज्ञा है, तो दुर्बल हस्तकार और आजकल के रोगियों के वास्ते दैनिक करना कितना हानिकारक है। और क्या ऐसे मनुष्यों को कोई भी औषधि लाभ पहुंचा सकती है? कदापि नहीं! चाहे वह कैसी उत्तम से उत्तम औषधि खावें कोई लाभ न होगा। शोक! सामर्थ्य तो ऐसी हो कि बिना स्तम्भन वटिका खाए मनोर्थ पूरा न कर सके, परन्तु मैथुन प्रति दिन एक बार से अधिक करने से भी बाज़ न आवें। मुझे हंसी आया करती है, जब कि प्रायः श्रीमान् लिखा करते हैं, कि एक बार तो सम्भोग होजाता है, परन्तु दूसरी बार उत्तेजना नहीं होती। शोक है ऐसे मनुष्यों पर! जालीनूस ने एक स्थान पर लिखा है, कि छः मास के पश्चात् मैथुन करना चाहिये। बूअलीसिना से

ऐसे एक मनुष्य ने पूछा कि स्त्री भोग कितने दिन पश्चात् करना चाहिये? उसने उत्तर दिया कि एक वर्ष के पश्चात्। उसने कहा जो एक साल न रह सके, आपने फरमाया, छः मास के पीछे करे। उसने फिर पूछा कि जो छै मास भी न रह सके, आपने कहा तीसरे महीने करे। उसने कहा जो इतना न रुक सके, कहा कि हर मास में एक वार मैथुन करे। युवक को शांति न हुई और कहा जो इतना भी सन्तोष न कर सके, फरमाया कि हर सप्ताह मुंह काला करे। युवक ने इस पर भी पूछा कि जो इतनी देर भी न रुक सके? आप ने कहा चौथे दिन भोग करे। युवक ने फिर भी वही प्रश्न किया जिस पर (शेखउलरईस बूअलीसेना) ने फरमाया कि जो उसका जी चाहे करे परन्तु भी तैय्यार रक्खे॥

तात्पर्य्य यह है कि दैनिक भोग करने वाले की साथ २ रहती है, न जाने कब करले। बूअली सेना ने बड़े बलवान् पुरुष के लिये चौथे दिन की आज्ञा दी है॥

फिर साहिबो?

आज कल के पुंसत्व हीन, धातु क्षीण रोगियों को क्या साल तक भी करना चाहिए। डाक्टर साहिब लिखते हैं, कि दैनिक भोग बलवान् से बलवान् मनुष्य के वास्ते जो आज तक हुए हैं बहुत है। ऐसे मनुष्य भी हैं, जो वर्षों तक इस क्रिया को अपनी शक्ति में बिना किसी विशेष वर्णनीय कमी के कर सके हैं, परन्तु एक समय आ जाता है, कि वह निर्बल होने आरम्भ होते हैं। सप्ताह में दो बार

से मनुष्यों के वास्ते बहुमैथुन है। सप्ताह में एक बार सीमा बद्ध कहा जा सकता है। और केवल स्वस्थ मनुष्य २५ साल की आयु से ४० साल की आयु तक इसके अनुसार कर सकते हैं॥

२१ वर्ष तक सर्वथा मैथुन न करना चाहिये, २१ से २५ के भीतर यदि आवश्यकता हो तो दसवें या पन्द्रहवें से अधिक न करना चाहिये। जितनी अधिकता की जावेगी उतना ही बल कम होता जायगा। यदि बुढ़ापे तक नीरोग रहना चाहते हो, तो तरुणाई में वीर्य को नष्ट न करना चाहिये॥

डाक्टर एक्टन (acton) साहिब लिखते हैं, कि यदि कोई पूछे कि मैथुन में अधिकता क्या है ? तो मैं उत्तर दूंगा कि जो और कामों में अधिकता है। अधिकता वह है जिससे स्वास्थ्य को हानि पहुंचती है। मेरे तजुर्बे में परिश्रमी मानसिक काम करने वाले विवाहित पुरुष किञ्चित ही ऐसे होंगे जो कि सप्ताह में एक बार से अधिक इस काम में प्रवृत्त हो सके हैं। दृढ़ और स्वस्थ मनुष्यों के लिए यह नियम है॥

डाक्टर ट्राल (trall) साहिब ने वही नियम लिखे हैं, जो कि हिन्दू शास्त्रों में अंकित हैं। और वह यह भी लिखते हैं, कि जो काम वासनाओं में फंसे हुए हैं वह इन नियमों का पालन नहीं कर सके। और जो लोग नियमानुसार जीवन व्यतीत करते हैं, जिन का सिद्धान्त है, कि जीने के लिए खाओ, न कि खाने के लिए जिओ, व्यायाम करते हैं, स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमों का पालन करते हैं, शारीरिक स्वास्थ्य का उन्हें पूरा ध्यान होता है, तो वह प्रायः यह काम भी नियमानुसार करते हैं। जो दुर्बल होते हैं, कोई काम नियमानुसार नहीं करते, और स्वास्थ्य जिनकी दृष्टि में कुछ नहीं, आहार, वस्त्र, नियमित व्यायाम का जिन्हें ध्यान नहीं, वह सदैव बहु-मैथुन किया करते हैं। इसके अतिरिक्त जो लोग इस काम पर लगे रहते हैं, उनके वास्ते कोई नियम नहीं है। राजाओं नव्वाबों का कोई दिन खाली नहीं जाता है, परन्तु इनका ध्यान इसी ओर होता है, और वह हजारों रुपए बल लाभ करने के लिये खर्चे करते रहते हैं। इस पर भी वह बड़ी आयु में स्त्री के योग्य नहीं रहते॥

डाक्टर ट्राब साहिब का कथन है कि, मेरा यह विश्वास है, किञ्चित ही ऐसे होंगे जो सप्ताह में एक बार बिना स्वास्थ्य की खराबी और जवानी में बुढ़ापा लाने के कर सकते हैं ॥

मुफ़र्रहुल्कलूब में लिखा है, कि पित्त, कफ़ प्रकृति वाले काम में अधिक प्रवृत्त हुआ करते हैं, और मैथुन से कम हानि पाते हैं। परन्तु वातज प्रकृति वाले उनसे कम और कफ़ज व वातज प्रकृति वाले इस क्रिया में असमर्थ होते हैं ॥

मैथुनाधिक्य के लक्षण

डाक्टर लिलेमण्ड (Lilamond) साहिब के वचन विशेष माननीय हैं। अर्थात् जिस भोग के पश्चात् आनन्द आवे, शरीर में स्फूर्ति और नूतन शक्ति ज्ञात हो, शरीर अधिक फुरतीला और काम करने के योग्य हो, जबकि व्यायाम या मानसिक काम की अधिक रुचि, लिंगेन्द्रिय मे थोड़ी देर पीछे शक्ति और अनुभव हो, तो हमें समझना चाहिये कि सम्भोग स्वास्थ्य के नियमानुसार हुआ है। यदि भोग क्रिया के पीछे थकान, शिर का भारीपन, अनुभव हो तो जान लेना चाहिये कि उचित सीमा उलंघन की गई ॥

क्यों साहिब! छाती पर हाथ रख कर बताओ तो सही, कि कभी तुमने इस नियम की पालना की है, फिर तुम्हें सदा औषधियों की कता न रहे तो क्या हो?

दूसरा नियम—अधिकता जानने का यह भी है कि जब तक सच्ची रुचि न हो सम्भोग न करें। सच्ची रुचि वह है, जो बिना स्त्री के साथ हंसे बोले बिना किस्सा कहानियों के सुनने, बिना में ऐसे विचारों को लाए, अपने आप हो और मनुष्य को मैथुन की ओर प्रेरित करे ॥

स्मरण रहे कि थोड़ी सी थकावट और सुस्ती जो थोड़ी देर के वास्ते जान पड़ती है उस से वेपदाली (अधिकता) जाहिर नहीं होती, कमज़ोरी ज्यादह, सुस्ती, उदासी अधिकता प्रगट करती है। जब कि भोग के पीछे शिर में दर्द होने लगे, तो यह अत्यन्त दुर्बलता का लक्षण है। इन नियमों पर ध्यान देने और सोचने विचारने से ज्ञात होगा, कि प्रति सैकड़ा ९९ मनुष्य उचित सीमा से बढ़ कर करने के कारण कैसे २ रोगों से फस रहे हैं। आज कल के निर्बलों के लिए कई महीनों के पश्चात् नियमानुसार दशा आसक्ता है। हम जानते हैं कि विषयी लोग तरह २ के कष्ट उठाते हुए भी इतनी देर सन्तोष न कर सकेंगे, परन्तु यह उन की इच्छा है कि स्वास्थ्य और आनन्द की ओर पग धरें, अथवा रोग और दुःख की ओर। विषयी पुरुषों के वास्ते जो किसी की नहीं सुना करते इतना और निवेदन कर देते हैं कि यदि हमारी सम्मति को नहीं मानते तो परमेश्वर के लिए इतना तो अवश्य करें, की महीने में एक दो वार, और अधिक से अधिक चार वार से कभी न बढ़ें अन्यथा शीघ्र ही हाथ मल २ कर रोना पड़ेगा, और निश्चय जानो कि वह दिन शीघ्र आने वाला है, जब कि तुम वर्ष में एक वार भी नहीं कर सकोगे, नपुंसक कहलाओगे, या ऐसे कठिन शीघ्रपतन रोग में ग्रस्त होगे कि बस लज्जा ही पल्ले पड़ा करेगी। उस समय तुम्हारा जीवन बोझ प्रतीत होगा, काश! की हमारी शिक्षा को पहले ही मान जाओ॥

क्लैब्यता के अन्य कारण॥

हस्तमैथुन, अनुचित व्यवहार व मैथुनाधिक्य ही वीर्य्य सम्बन्धी सर्व रोगों के विशेष कारण हैं जिसका वर्णन हो चुका है। दो चार नोट और आवश्यक हैं जो अंकित किये जाते हैं॥

लिंग वर्णन करने की हम यहां आवश्यकता नहीं समझते,

संकेत मात्र लिखते हैं, यह मैथुन से भी जो निर्बलता होती है वह भी प्राण शक्ति, रक्त, और वात के कम होने से होता है और यही तीन वस्तुयें उत्तेजना के वास्ते आवश्यक हैं। प्राण शक्ति सूक्ष्म है, आनन्द प्रदान करती है, रुधिर के कारण कठोरता इस में आती है, और वात से फैलावट होती है॥

प्राण शक्ति तीन प्रकार की-हार्दिक, मस्तिष्कीय, और यकृतीय॥

हार्दिक शक्ति से मैथुन में आनन्द आता है॥

मस्तिष्क की शक्ति से स्त्री पुरुष के जननेन्द्रियों के मिलने व छिलने से आनन्द होता है॥

यकृत् शक्ति मैथुन की ओर प्रेरित करती है॥

इन २ की निर्बलताओं से उनकी जीवन शक्ति में निर्बलता आजाती है। और रुधिर की कमी से जो क्लैव्यता होती है उस में कठोरता नहीं आती है। और यह अधिकतर यकृत् की निर्बलता के कारण से होता है॥

वात क्षय की क्लैव्यता में फैलाव भली भांति नहीं होता उस समय वातक औषधियां व पदार्थ दिए जाते हैं परन्तु इस प्रकार का रोग हमने कम देखा है। वीर्य्य के अधिक निकलने और उसके खराब हो जाने से प्रायः क्लैव्यता होती है। यही तो शरीर का सूर्य है और इस के न होने से शरीर के समस्त अवयव भी निर्बल हो जाते हैं और तब प्राण रक्त वात भी हो तो बिना इस के वह कर ही क्या सकता है, इस वास्ते बहुत करके ध्यान रखना चाहिए कि वीर्य्य जब कम हो, पतला हो, या दूषित हो तो पहले उस की ओर ध्यान दिया जाय॥

इतर क्रिया से यदि नसें व पट्ठे ऐसे सुस्त हो गए हैं, कि उन पर वायु की गति का कुछ प्रभाव नहीं होता है तो भी उत्तेजना

असम्भव है, उस समय उपर्युक्त कारणों का खोज करके उस औषधि के साथ २ कोई तिला व लेपादि की मालिश से उन नसों व पट्ठों को दृढ़ करना चाहिये ताकि वह प्रभाव उचित जगह पहुंचा कर पूरी शक्ति का हेतु बन सके॥

सब से बुरी प्रकार की नपुंसकता

वह है जो कि मन से उत्पन्न होती है। भय शंका घृणा, संभ्राति आदि सम्पूर्ण बल नष्ट कर देते हैं। यह विचार कि मैं प्रबल नहीं हो सकूंगा मैं निर्बल हूं, नपुंसक बनने के लिए पर्य्याप्त है। तुम ऊपर २ से खूब कहते हो कि मैं बलवान् हूं, जबरदस्त हूं परन्तु थोड़ा आन्तरिक विश्वास हो जावे कि तुम कुछ नहीं कर सकते हो, फिर घोड़े जैसा बल भी हो परन्तु तुम कुछ नहीं कर सकोगे। मन की शक्ति बड़ी प्रबल है, इसका इलाज किसी औषधि से नहीं हो सकता, इसके वास्ते और उपाय करने पड़ते हैं। कई लोगों के पत्र हमको आते हैं, कि हम घर तो सब कुछ कर लेते हैं, परन्तु बाहर कुछ नहीं हो सकता है।ऐसे मनुष्यों को तो हम यह उत्तर दिया करते हैं, कि अच्छा है तुम एक पाप से बचते हो,परन्तु प्रायः ऐसा होता है, कि मनुष्य अपने घर से भी रह जाता है, और इसका कोई कारण सिवाय मन के सन्देह के मालूम नहीं हुआ करता है। पहिली वार ही पास जाते समय भय और शंका मालूम हुई और कुछ न हुआ, इस के पीछे फिर वह भय दूर नहीं होता। अभिज्ञ वैद्यों से सैंकडों रुपयों की औषधियां लेकर खाते हैं और लाभ नहीं होता। बाज़ी मूर्ख स्त्रियां भी अपने पति की नपुंसकता का हेतु होती हैं, एक बार किसी कारण से पुरुष रह गया वह हंस देती है, घृणा की दृष्टि से देखती है, या मखौल कर देती है. उस से पुरुष के दिल में बड़ी से [illegible] है, और सदैव के लिए कम से कम उस स्त्री के लिए नपुंसक हो जाता है। मनको मन से ही उठाया जा[illegible] है, और इसी सिद्धान्त पर सब इलाज किया जाया करता है॥

पहुंचे खटाई तेल मिर्च, अधिक लवण भी कुव्यथा उत्पन्न करते हैं। सोजाक, आतशक के पीछे भी नपुंसकता हो जाया करती है। लिंगेन्द्री में किसी प्रकार की खराबी, किसी नाड़ का कट जाना अण्ड कोषों का अपने काम में निर्बल हो जाना, पुंसकत्व को कम करते हैं। इस प्रकार कई बातें हैं, [illegible] जान कर और असली कारण को मालूम करके इलाज किया हुआ कुछ लाभ दे सकता है अन्य नहीं॥

यह रोग बड़े कठिन रोग हैं, और वह लोग अधिक रोगी होते हैं, जो अज्ञानता से बिना चिकित्सक के गुण स्वभाव जाने इलाज कराते रहते हैं॥

लिंगेन्द्रियों की चिकित्सा पद्धति॥

कारणों का वर्णन हो चुका अब चिकित्सा लिखी जाती है। लिङ्ग के रोगों से हमारा अभिप्राय वीर्य्य रोगों, नपुंसकता, शीघ्र पतन, शुक्रमेह, धातु तारल्य, लिङ्ग की नसों, और पट्ठों की शिथिलता प्रमेहादि, इन के साथ जो और रोग होते हैं, जैसाकि पहले बयान किया गया है, यह सब इसी के भीतर समझनी चाहिए॥

शोक का स्थान है, कि यह रोग इतने बढ़ते जाते हैं, कि दैनिक डाक को देख कर भारत वर्ष की दशा पर रोना आता है। झूठे मत और सभ्यता के फैलाने वाले कहते हैं, कि ऐसे रोगियों के इलाज की आवश्यकता नहीं है। उन्हों ने अपने किए का फल पाया और ऐसी औषधियों का विज्ञापन देना पाप है। परन्तु साहिबो! डूबते को बचाना, गिरे हुए को उठाना तो हमारा कर्तव्य है॥

डाक्टर ट्राल (Trall) साहब लिखते हैं, कि जो लोग इस समय ऐसे कठिन रोगों से पीड़ित हैं वह कभी इन कुकर्मों के कर्ता न बनते यदि उनको पहले बतलाया जाता। बल्कि उनको इनके विनाशकारी

फलों से अवगत करते हैं, और न माता पिता उन बातों को बताना कर्तव्य समझते हैं दुराचारी मित्रों की संगत उनको खराब करदेती है। हजारों पत्र हमारे पास आते हैं जिसमें सच मुच लोग रोते हैं और लिखते हैं कि यदि हमको इतनी हानियों से वह यथावत अवगत होते तो कभी अपने पांव पर आप कुल्हाड़ी न मारते, परन्तु जो गिर चुके हैं उनको हम न उठावें, यह सभ्यता और मनुष्यत्व से दूर है ॥

इस पुस्तक को सहस्रों की संख्या में बांटा जा चुका है, और अगणित पत्र आते हैं कि काश इस रिसाले को हमने पहिले पढ़ा होता ॥

यदि कोई अपनी इच्छा के अनुसार स्वयम् औषधि सोच ले तो वह मंगवा सके हैं, जो स्वयम् नहीं योजना कर सके उनको सविस्तर हाल उस फारम पर जो इस पुस्तक के पीछे लगी है लिखना चाहिये ॥

—o—

दूसरा भाग ।

अब हम उन मनुष्यों के वास्ते किञ्चित आवश्यक सूचनायें लिखते हैं जो दुर्भाग्य से हस्तमैथुन अथवा बहुमैथुन करने के कारण विविध रोगों में ग्रस्त हैं। हस्तक्रिया, लड़कों से व्यभिचार, और बहुमैथुन ने तो नाश ही कर दिया था, इस पर झूठे, लुटेरे, विज्ञापन बाजों ने रही सही कसर निकाल दी, प्रत्येक इस तबाही का लाभ उठाता है, और रोग के दूर करने का सच्चा झूठा दावा करता है। और रोगी भी यदि साधारण पेट दर्द हो, तो अच्छे से अच्छे वैद्य के पास जाते हैं, परन्तु धातु-

पुष्टि की औषधियां जिसका विज्ञापन (इश्तिहार) देखते हैं उसी से मंगवा लेते हैं। उन में से कोई सात दिन में ही सदैव को पुष्टि देने की प्रतिज्ञा करता है, कोई १५ दिन के भीतर बलवान पुरुष बनाता है, कोई चालीस दिन के भीतर पहलवान् बनाता है। विज्ञापन को पढ़ते ही रोगी फड़क जाता है, किसी को सन्यासी दवा बता गया है, किसी के बाप दादा की प्रभावशाली औषधि है। शब्द ऐसे लच्छेदार लिखते हैं, कि जो उसे पढ़े एक बार तो अवश्य ही दवाई मंगवाये। क्योंकि एक दो रुपया की औषधि से आयु भर की शक्ति का ठेका करते हैं। यदि इनमें से एक भी सच्चा होता तो रोगी क्यों भटकते फिरते? वास्तविक बात यह है, कि ऐसी औषधियों से थोड़े दिन किञ्चित पुष्टि ज्ञात होकर पश्चात् पहले से भी बुरी अवस्था होजाती है। हज़ारों और लाखों ऐसे रोगी हैं, जो एकको छोड़ दूसरी और दूसरी को छोड़ तीसरी और इसी प्रकार बीसों औषधियां मंगवाते रहते हैं। परन्तु "बढ़ता गया रोग यह ज्यों २ औषधि कीना" हम यह नहीं कहते कि सबके सब झूठे हैं परन्तु बहुत बड़ी संख्या इन लुटेरे विज्ञापन बाज़ों की है। एक ही औषधि को लेकर वह सब का उसी से इलाज करना चाहते हैं, और हम तजरुबे से कहते हैं कि कई रोगियों पर हम ने दस २ औषधियों को बदला, तब कहीं जाकर आराम हुआ। वीर्य्य सम्बन्धी रोगों का दूर करना कोई बालकों का खेल नहीं है। औषधि सेवन काल में लाभ और पश्चात् रद्दी होजाने का यह कारण है, कि उनमें अफीम, भंग, संखिया आदिक ऐसी निकृष्ट होती हैं, कि पहिले पहल तो उनका उत्तेजन कारी प्रभाव होता है परन्तु पीछे से सम्पूर्ण पट्ठे (स्नायु) दुर्बल होजाते हैं॥

साहबो! यदि आपको मेरे वचन पर विश्वास नहीं है तो किसी अपने मित्र से जो ऐसी औषधियां मंगवा चुका हो, दरियाफत करलें। यद्यपि बड़े २ दावे बांधने वालों से प्रत्येक की औषधि मंगवाई परन्तु रोगी की अवस्था में बीस से उन्नीस का फर्क न हुआ। इस प्रकार

का इलाज कराने से पहिले यदि "रिसाला हकीम व मरीज़ उर्दू" जो ≈)॥ को कार्य्यालय अमृतधारा से मिलता है पढ़ लिया जाय तो बहुत उचित होगा। इसमें वैद्य वा रोगी के कर्तव्यों का वर्णन है। हिन्दी में अनुवाद होरहा है॥

हां! बहुत दफा रोगी का भी अपराध होता है। यह स्मरण रखना चाहिये कि धातु सम्बन्धी सम्पूर्ण रोगों को बहुत धीरे २ आराम आता है और जो लोग आज इसकी कल उसकी औषधि सेवन करते रहते हैं, और दृढ़ता के साथ एक का नहीं करते वह अकृत कार्य्य रहा करते हैं। जिस योग्य वैद्य का तुमने इलाज आरम्भ किया है, और आराम लगा है, तो उसकी आज्ञानुसार चिकित्सा करते जाओ। आप सोचें तो सही, कि जिस मकान को गिराते हुए इतनी देर लगी है, कि कई सालों के पीछे क्रमशः इस दर्जे तक पहुंचा है, उसको फिर बनाने के वास्ते कितनी देर की आवश्यकता है। सोचो तो सही कि पांच साल की खराबियों से क्रमशः गई शक्ति को वापिस लाने के वास्ते आप केवल सप्ताह दो सप्ताह की अवधि देते हैं। हमने अपनी औषधियोंका नमूना इसीवास्ते रक्खा हुआ है कि यदि आपको विज्ञापनिक वैद्यों ने अविश्वासित (बदजन) कर दिया है, तो थोड़ी सी औषधि मंगवा कर देखलो, यदि किंचित भी हो तो फिर इसको यथेष्ट समय तक सेवन करो। जो लोग हमसे परिचित हैं,और औषधि निश्चित कराते हैं,चाहे एक ही सप्ताह में आजावे या छः मास में, वह सिवाय हमारे और किसी के पास न जावेंगे। क्योंकि उनको विश्वास हो चुका है कि हमारे यहां से अच्छी दवाई और कहीं नहीं मिलेगी। परमात्मा की कृपा है कि जो लोग हम से विधि पूर्वक इलाज कराते हैं वह प्रति सैकड़ा ६० आरोग्यता लाभ करते हैं। आगे ईश्वर के आधीन है, हम कोई दावा नहीं करते हैं। हम केवल यह कहते हैं, कि हम अच्छी से अच्छी औषधि देंगे, कि जो और जगह से नहीं मिलेगी, क्योंकि केवल इस

रोग को सौ से अधिक औषधियां हर समय हमारे यहां तैय्यार रहती हैं॥

हां मैं यह वर्णन कर रहा था, कि वीर्य्य सम्बन्धी रोगों को देर में आराम आया करता है। इसमें यह बात स्मरण रक्खें, कि शुक्रमेह अर्थात् धातुका मूत्र के साथ गिरना शीघ्र बंद होसक्ता है। स्वप्न दोष आधिक्य को इससे अधिक देर लगती है। जो लोग लिखा करते हैं कि हम चाहते हैं कि स्वप्न दोष पूर्णतः बन्द हो जावे, वह गलती करते हैं, अब उन के वास्ते ऐसा होना कठिन है। वह नदी जब एक बार बहने लग पड़ी तो फिर पूर्णतः बन्द कभी न होगी। इसलिये हमारा अनुभव है कि महीने में एक दो बार प्रायः जवानों को औषधि करने पर भी होता रहता है। सप्ताह में एक बार या अधिक (बाज़ों को रात में दो तीन बार होने लग जाता है) स्वप्न में वीर्य्य का निकल जाना बहुत बुरा है, और इसका अवश्य इलाज करना चाहिये। स्वप्नदोष वह अद्भुत हानिकारक होता है, जोकि बिना विषय सम्बन्धी स्वप्न के हो, बिना ध्यान होने के वीर्य्य निकल जाया करे और प्रभात को ही पता लगे। इसके सम्बन्ध में इतना और स्मरण रखना चाहिये कि बाज़ समय पुष्टि कारक दवा खाने पर स्वप्न दोष पहिले से अधिक हो जाया करता है। और इसका कारण यह होता है कि शरीर इस योग्य नहीं होता कि उस पुष्टि और वीर्य्य को सहार सके जो उस औषधि से उत्पन्न होता है। यदि औषधि धातु गाढ़ी करने वाली है तो धीरे २ स्वप्न दोष मिट जावेगा। शीघ्र पतन देर तक ठहरने वाला रोग है और इसका इलाज बड़ा कठिन है। कभी २ ऐसा भी देखा गया है कि स्वप्न दोष, धातु क्षीणता, धातु जाना सब दूर होगए, परन्तु शीघ्र पतन अभी विराजमान है॥

जब कि प्रवेश करते ही वीर्य्य निकल जाता है, या उत्तेजना होते ही धातु निकलनी आरम्भ होती है, या प्यार करते ही वीर्य्य स्खलित होजाता है, और लज्जा उठानी पड़ती है तो यह दशा अत्यन्त बुरी होती है। और चिरकाल तक इसके इलाज की आवश्यकता होती है। परन्तु जिसके तनिक भी स्तम्भन है यदि वह हमारी "शीघ्र पतन दूर विना औषधि" को मंगवा कर उसके नियमों पर करे तो अपने स्त्री को प्रसन्न रख सकता है यदि वह अमल भी करे जो इसमें वर्णन है तो स्तंभन की शक्ति भी बहुत बढ़ सकती है (जितनी चाहे) शीघ्र पतन रोग को बहुत ही धीरे २ आराम आया करता है। स्तम्भनकारी औषधियां खाकर एक दिन का गुज़ारा हो सकाहै, और महीने पन्द्रहवें किसी अच्छी दवाई से यदि आवश्यकता पड़े यह काम मजबूरन ले लें। परन्तु स्तम्भन की औषधियों के अधिक सेवन से शीघ्र पतन आगे से भी अधिक बढ़ जाता है और अन्य बहुत से रोगों के उत्पन्न होने का भय रहता है। स्तम्भनकारी औषधि केवल वही खानी चाहिये जो रोगो को नष्ट करने वाली हो अस्तु यही उचित है कि असली रोगों का इलाज करें, और उसके वास्ते तन मन धन से यत्न करें। साल भर भी औषधि खानी पड़े तो भी अवश्य खावे। अन्यथा स्मरण रहे कि यदि इधर उधर भटकते फिरेंगें, तो आराम नहीं आवेगा। कुछ लोग जितनी उनमें स्थंभन शक्ति होती है उससे अधिक इच्छा करते हैं, वस्तुतः यह शक्ति प्रत्येक मनुष्य में भिन्न २ होती है और जो किसी को स्वाभाविक हो उससे बढ़ना कठिन है जो पीछे कम हुई है वह औषधि से दूर होने योग्य है। १ मिनट से १० मिनट तक स्वाभाविक भिन्न २ प्रकृति वालों को मालूम हो सकती है। शीघ्र पतन के वास्ते एक स्नावन भी है ॥

कम उत्तेजना यदि अन्य कारणों से होतो पुष्टि कर औषधि खाने से शीघ्र आराम आजाता है। यदि कुछ किया गर्भाशय लो छूटे

तो इसके वास्ते पुष्टि कर औषधि की भी आवश्यकता पड़ती है, और साथ ही लिंगलेप वा मालिश भी कराई जाती है और धीरे २ आराम आ जाता है ॥

अचेतनता अथवा क्लैब्यता को विशेष रूप से दूर करने वाली और पुष्टि कर बहुत सी औषधियां हैं, और यदि प्रमेह, शीघ्रपतन स्वप्नदोष, इत्यादि और रोग न हों तो दो तीन सप्ताह औषधि खाने से ही बहुत बल उत्पन्न हो जाता है। यहां यह स्मरण रखना चाहिए जब बाजीकरण के वास्ते औषधि सेवन करें, तो जो शक्ति औषधि से उत्पन्न हो वह ज्यों २ उत्पन्न हो, गंवाते न जावें। यह पुस्तक लिखी जा रही थी कि एक रोगी मेरे पास आया और प्रकट किया कि जो पांच पुड़िया औषधि आपने दी थी उससे पांच ही दिन पुष्टि रही, उसके पश्चात् फिर मैंने आज तक स्त्री प्रसंग नहीं किया। मैंने उससे प्रश्न किया कि पांच दिन में क्या आप सम्भोग कर सकते थे? उसने उत्तर दिया कि हां इन पांच दिनों में तो प्रति दिन करता रहा हूं। और इन दिनों घृत भी पचाता रहा हूं और पुष्टि भी खूब रही है। स्फूर्ति और तरुणाई भी मालूम होती रही है। मैंने उसको समझाया कि यदि वह ५ दिन सन्तोष तो यही पांच पुड़िया दो चार सप्ताह तक उसकी शक्ति को स्थिर रखती।

अतः इन रोगों की औषधियां

खाने के समय जितना मैथुन करने से दूर रहा जाय ही उत्तम है। जब तक औषधि सेवन करें तब तक बचे रहें, अन्यथा ४० दिन तो अवश्य परहेज करके एक औषधि सेवन करें। जिनको चिरकाल तक औषधि खानी पड़े वह मासिक इस क्रिया को कर सकते हैं। जो बहुत कामी हैं वह पन्दरहवें दिन करें यद्यपि उन्हें औषधि अधिक देर तक खानी पड़ेगी। जो किंचित भी रोक न [illegible] सकें है

यह भाड़े के टट्टू बने रहेंगे जब तक औषधि खाते रहे आराम रहेगा किन्तु कतिपय समय औषधियां भी काम न करेंगी ॥

हमारी औषधियों से इलाज कराने वाले निम्न लिखित बातों का ध्यान रक्खें ।

(१) यदि कोई ऐसी औषधि देखें जिसका प्रभाव ठीक आपकी अवस्था के अनुसार पड़ता है तो निसन्देह मंगावें ॥

(२) यदि केवल साधारण खराबी है, और किसी विशेष बात के वास्ते एक औषधि की आवश्यकता है, तो पत्र में हाल लिख कर औषधि मंगावें, (पत्र पढ़ने की फीस १ रुपये ली जाती है जोकि पत्र के साथ आनी चाहिये) इस दशा में औषधि भेज कर उस पत्र को दाखिल दफ्तर किया जाता है ।

(३) जिनका लम्बा इलाज है, और वह उस फार्म को जो इस पुस्तक के अन्त में लगा हुआ है, उसको निकाल कर खाना पुरी करके भेजदें, उनका नियमानुसार इलाज आरम्भ होगा, और एक फाईल खोली जाएगी, जिसमें उनके सब पत्र रक्खे जावेंगे, ऐसे मनुष्यों को मन लगा कर इलाज करवाना चाहिए, यह रोग कठिन हैं। एक औषधि से आराम मालूम न हो, तो इलाज छोड़ नहीं देना चाहिए, फाइल बनाने की फीस १) है, ऐसी दशा में २) मनी आर्डर करके भेजना चाहिये ॥

(४) बाज मनुष्य औषधियों के विषय में बड़ी २ आशाएं रक्खा करते हैं, वह समझते हैं कि एक डबिया अमुक वस्तु की खावेंगे और हम राजी हो जावेंगे, उनको मामूली आराम हो तो वह कहते हैं कि औषधि खराब है, उन लोगों से प्रार्थना है, कि वह हमारे इलाज को आरम्भ न करें, हमारे लाखों रुपये के कारखाने को जिन्होंने ... है, और औषधियों को बर्ता है वह जानते हैं कि उम्र से ज... खाने से शीघ्र

औषधि तैयार करने का हम उद्योग करते हैं और सैकड़ों औषधियां तैयार रखती हैं परन्तु आराम समय पर ही होता है, इतनी दूर बैठे हुए कभी परीक्षा की भी भूल हो सकती है, या बाज समय हम उचित नहीं समझते कि जोश करने वाली कोई औषधि दी जावे, ऐसी दशाओं में थोड़े दिनों के पीछे ही औषधि को बुरा कहने लग जाना अच्छा नहीं, बड़े से बड़े दुनिया के किसी चिकित्सक को लीजिए, साधारण रोगों के वास्ते बाज समय रोज नुसखे बदलने पड़ते हैं, फिर ऐसे कठिन रोगों में लोग क्यों इच्छा करते हैं कि पहिली ही औषधि से थोड़े ही दिनों में उनकी इच्छा के अनुसार आराम हो जावे, ऐसे लोग उनका इलाज करवाते रहते हैं जो उनको बड़ी २ आशाएं दिलावें, और हमेशा अकृतकार्य्य रहते हैं॥

(५) इलाज विश्वास से आरम्भ करो, अविश्वास से आराम नहीं होता है॥

(६) औषधादि भेजने में बड़ी सावधानी रक्खी जाती है, परन्तु फिर भी मनुष्य से गलती होना संभव है। क्लर्कादि से गलती हो सकती है, ऐसी दशा में तत्काल ही हमको सूचित करना चाहिये, गलती ठीक कर दी जायगी। यदि किसी कारण वश औषधि खाने से कोई कष्ट मालुम होतो उसे तत्काल ही बंद करके हमें सूचना देनी चाहिये ताकि उसके कारण को मालूम किया जाय॥

भस्मों का सेवन॥

यह एक अत्यन्त बुरा और निर्मूल विचार है कि भस्म ४० वर्ष की आयु के पहिले न खानी चाहिए॥

भस्म तथा रस द्वारा चिकित्सा एक अत्यन्त लाभ दायक विधि है। भस्में और रस ही है मानों मृत को जीवित कर सके है। मासों के रोग दिवसों में और दिवसों के रोग घण्टों में दूर, [illegible]

सामर्थ इन्हीं में है। एक२ भस्म व रस ही बीसों रोगों को दूर करसक्ता है। सन्यासियों का तीला प्रसिद्ध है, जो वर्षों के रोगों को एक दिनमें गंवा दिया करते हैं, वह इन्हीं भस्मों अथवा रसादिक से बनता है। भस्म एक दिन के बालक से लेकर सौ वर्ष के बूढ़े तक को उचित मात्रा में दी जासक्ती है। रसों और भस्मों का एक चावल जो कुछ कर सक्ता है, वह दूसरी औषधियों का एक कटोरा भी नहीं कर सक्ता। वैद्यक पत्र देशोपकारक जिन को पढ़ने का अवसर मिलता है वह भस्मों और रसों के कामों से भलीभान्त अवगत हैं, यहां विस्तार पूर्वक नहीं लिखा जा सक्ता॥

लोग कहते है कि भस्म हानि बहुत करती है, परन्तु मैं कहता हूं कि भस्मों, रसों, और प्रत्येक वस्तु को यदि उचित अवसर पर न दिया जावे तो हानि करती है। सोंठ भी यदि अनुचित विधि से दी जावे हानि करेगी और इसी प्रकार भस्म संखिया भी। परन्तु सोंठ का लाभ भी साधारण है और इस वास्ते अनुचित विधि से दी हुई हानि भी वैसी ही करती है, प्रत्युत भस्म संखिया जैसा कि गुण में अमृत तुल्य है अनुचित विधि से देने से उसका कुफल भी बहुत अधिक प्रगट होगा। अस्तु स्मरण रक्खो कि यदि भस्म प्रकृति को सोच विचार कर उचित विधि से दिया जाता है, तो कभी हानि न होगी प्रत्युत अमृतवत प्रमाणित होगी। भस्म और रसों में यह बड़ी विशेषता है, कि अनुपान के परिवर्तन से प्रत्येक प्रकृति के अनुकूल होजाते हैं। यथा एक रस पुष्टि के लिए हमने एक व्यक्ति को दिया और कहा कि पान से खाया करो, उसने खाया उसको बहुत गरमी हुई अब यदि वह उसकी मात्रा कम कर देवे या पान के स्थान में मक्खन या मलाई में खावे वही भस्म उसको लाभदायक होगी। भस्मों और रसों में लिखा होता है कि अमुक रोगमें लाभदायक है, तो वह उसके सम्पूर्ण प्रकारों में प्राय. हितकर होता है। यदि उचित रूप से स्वभाव के अनुसार अनुपान नियत कर

दिया जावे। भस्मों और रसों के द्वारा चिकित्सा एक महान् और श्रेष्ठ चिकित्सा है

एक बात और है कि जो भस्में उचित रूप से तैय्यार न की गई हों, वह वास्तविक हानि कारक होती हैं। यद्यपि रोग को दूर कर देती है, परन्तु अन्य हानियां करती हैं। जैसा कि अशुद्ध पारा की भस्म प्रायः नपुंसकता और कुष्ट को उत्पन्न करती है, यदि कोई ऐसी भस्म देता है तो उसका दोष है न कि भस्म का। प्रायः देखा गया है कि अशुद्ध धातुओं की बनी हुई भस्में बहुधा रोगों को उत्पन्न करती हैं, जिसको कि यह शुद्ध होकर दूर कर सकती हैं। इसका इलाज यह हो सक्ता है कि योग्य वैद्य से तैयार कराया जावे और ऐसे वैसे से न लिया जावे। मुझे एक बार एक महाशय ने लिखा, कि अमुक २ दुकानों से भस्म कलई ॥) तोला मिलती है आप १०)तोला क्यों बेचते हैं? मैंने उत्तर दिया कि ऐसी भस्म ।≈) तोला पर भेज सक्ता हूं परन्तु जो भस्म डेढ़ सौ पुट देकर महीने भर के परिश्रम से तैय्यार करू तो १०) रु० तोला से कम नहीं दे सक्ता। स्मरण रक्खो कि सस्ते की ओर ध्यान न देना चाहिए, किन्तु उत्तम औषधि की ओर, और हम आप लोगों को निश्चय दिलाते हैं, कि हमारी प्रत्येक भस्म अथवा रस अत्यन्त सफाई और चौकसी से तैयार किये जाते हैं। यदि खराब हो जावे तो तुरन्त फेंक दिया जाता है॥

भस्मों के सेवन के विषय में दो चार शब्द लिखने की इस लिये आवश्यकता हुई कि कभी २ कोई पत्र आ ही जाता है, कि मेरे मित्र मुझ को भस्म के सेवन करने से रोकते हैं। यह उनकी भूल है, क्योंकि यदि उन्हें भस्म हितकर है, तो निसन्देह उनको सेवन करना चाहिये॥

औषधियों के सेवन करने की विधि

(१) औषधि की जो कम से कम खुराक लिखी हो उससे आरम्भ करनी चाहिये। यथा लिखा हो कि मात्रा अर्द्ध गोली से दो गोली तक, मात्रा दो चावल से एक रत्ती तक, तो इसका अभिप्राय यही होता है, कि पहिले दिन सब से थोड़ी मात्रा अर्द्ध वटिका, अथवा २ चावल, अथवा जो कुछ लिखा हो खावें। यदि मात्रा एक वटिका दैनिक है तो छोटी वटिका ढूंढ कर खानी चाहिये। उस दिन यदि तबीयत पर कोई विशेष प्रभाव न हो, प्रत्युत ऐसा प्रतीत हो कि जैसे कोई औषधि खाई ही नहीं, तो अगले दिन मात्रा अधिक कर दें और इस प्रकार बढ़ाते जावें। यदि पहले ही दिवस गरमी अथवा कोई अन्य ऐसी ही बात प्रगट हो, तो दूध मलाई अधिक सेवन करें। तथा दूसरे दिन मात्रा किञ्चित् कम कर दें। सम्पूर्ण औषधियों के सेवन में इसी नियम को स्मरण रखना चाहिये, और यह भी स्मरण रहे कि पित्त प्रकृति वाले पौष्टिक औषधियों को अल्प मात्रा में सेवन कर सके हैं। और कफ प्रकृति वाले अधिक, जो लोग पचा सकें वह सायम प्रातः दो बार दवाई कर सके हैं। कुछ हानि नहीं है॥

(२) औषधि सेवन के दिनों में मैथुन से बचे रहना चाहिये। अथवा उन नियमों के अनुसार करना चाहिए जो प्रथम भाग में इसके विषय में अंकित है। यदि वीर्य्य को गाढ़ा करने वाली औषधि खाते हैं, तो ऐसे विचारों से भी बचे रहना चाहिये, परन्तु जब वाजीकरण के वास्ते खाते हों उचित मात्रा में सम्भोग बुरा नहीं है॥

(३) यदि कोई औषधि गुण करती हुई अनुभव न हो तो पत्र द्वारा पूछ सके हैं, और जो लाभ कर रही हो, तो उसका उद्देश पूरा होने पर्य्यन्त खाना चाहिये॥

(४) जो लोग कहा करते हैं, कि ऐसी औषधि दो कि सारी आयु भर औषधि की आवश्यकता न रहे, उन की सेवा में मेरा यह उत्तर है कि जब तुम उत्पन्न हुए थे और फिर जवानी प्राप्त की थी उस समय भी तो तुम को यह बीमारी न थी। यदि तुम ने अपनी अनुचित क्रियाओं से इसको लहेड़ लिया है, तो क्यों न फिर वैसी ... से यह बीमारी तुम्हें आ घेरेगी। यदि तुम स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमों का पालन करोगे, और प्रथम भाग के नियमों का पूरा ध्यान रक्खोगे, तो निश्चय जानो कि फिर कभी यह रोग न होगा ॥

(५) दूध, घृत, मलाई मक्खन आदि पदार्थ ऐसी औषधि के सेवन करने वाले को अधिक खाने चाहियें, परन्तु इतना कि जो पच सकें। क्रमशः इन के पचने की शक्ति बढ़ती जाती है। दूध ... में उबला हुआ और गरमियों में धारोष्ण उत्तम है, जो कि उसी समय का दुहा हुआ हो। मलाई, मक्खन, शीतल स्निग्ध हैं, घी उष्णस्निग्ध है। यदि औषधि सेवन काल में कुछ रुक्षता अथवा दाह आदि प्रतीत हो तो मक्खन अथवा घी, अथवा दूध के खाने अथवा अर्क गावज़ुबान और बेदमुश्क आदि पीने से दूर होजाता है। दूध गरम करके उसमें घी और मिश्री मिलाकर पीना बहुत ही पुष्टि देता है, और वीर्य्य को बढ़ाता है। मध्यान्ह के उपरांत तीसरे पहर इस को भी पी लिया करे तो उत्तम है ॥

(६) पुष्टिकर औषधि सेवन करने से पहिले जुलाब ले लिया जाय तो उत्तम है, जिनके कोष्टबद्धता रहती हो उनको तो अवश्य लेना चाहिये ॥

(७) औषधियां प्रायः दूध के साथ खानी लिखी हैं। दूध गाय का उत्तम है। जो वह न मिले तो भैंस वा बकरी का, यदि दूध न मिले तो घी से अथवा मक्खन से अथवा मलाई से दवाई खावे। यह न मिले तो मधु से अथवा मधु व घृत से खा सकते हैं। परन्तु

स्मरण रहे कि मधु घृत से दुना हो। दूध जिन को अनुकूल न आवे वह काली मूसली का अर्क निकलवालें तो बहुत उत्तम है। मूसली १ सेर में छः सेर पानी मिला कर अर्क खिचवा लें॥

वीर्य्य सम्बन्धी रोगों में निम्न लिखित वर्जित है:—

मैथुन, तैल के पदार्थ, बहुत उष्ण (गर्म) पदार्थ, मल मूत्र आदि के वेग को रोकना, विष्टम्भी पदार्थ, छाछ, दही, और सम्पूर्ण प्रकार के खट्टे पदार्थ (यथावश्यक किंचित अनार दाना या इमली की खटाई खा सक्ते हैं।) दिन में सोना नमक का अधिक व्यवहार।

नि लिखित पदार्थ बल बढ़ाने वाले हैं:—

अच्छे २ स्वादिष्ट भोजन, राग, बाजा, अपनी प्रिय स्त्री को सुगन्धि लगा कर पास बैठाना, पुष्पों की माला, वाटिकाओं (बगीचों) की सैर, चन्द्रमा की चांदनी, घी, दूध, मिश्री मिलाकर पीना, गेहूं मक्खन, साठी चावल, दाख, शतावरि, कौंचबीज, गोखरू, तालमखाना असगन्ध, गाजर, बिनौला मेवा, सेमल का फूल खजूर, नारियल बादाम, तिल मूसली, मुलेठी, अकरकरा, जायफल, जावित्री, बंश लोचन सालिब, आंमला, खशखाश, मस्तगी, मोचरस, पीपल, सोंठ नागरमोथा, इत्यादि बल वीर्य्य को बढ़ाने वाले हैं॥

कुछेक वस्तु जो वीर्य सम्बन्धी रोगों के लिए लाभदायक हैं व अन्य औषधियों के सेवन के साथ अथवा वैसे ही इनको सेवन करना बड़ा गुणकारी है। यदि विशेष औषधियों के सेवन के साथ इनमें से कोई भी

वस्तु सेवन की जाय तो बहुत ही शीघ्र लाभ होता है।

(१) चावलों को और माश की घुली हुई दाल को २ घी में भून रक्खे। इन में से दो दो तोला लेकर दूध में डाल कर खीर की मान्तिं बना कर खायें तो वीर्य्य गाढा करता है। मस्तिष्क को बल देता है पौष्टिक तथा प्रमेह नाशक है॥

(२) इसबगोल दो तोले लेकर दूध में डाल कर खीर बना कर खाना पित्तज प्रकृति वालों के लिये विशेष गुण कारी है। प्रमेह को दूर करता है और पित्तज शिरः शूल को हितकर है। शीघ्र पतन को भी लाभदायक है। घर में तय्यार करते समय यदि दूध में इलायची, दारचीनी एक २ माशा और केसर एक आधी रत्ती मिला लिया जाय तो अधिक पौष्टिक हो जाता है॥

(३) वाजीकरण औषधियों के साथ जो दूध पिया जाता है यदि उस दूध में औटते समय सालिब मिसरी ६ माशा पीस कर डाल दी जावे और भली भान्ति पक जाने पर मिसरी मिला कर उस दूध को पिया जावे तो बहुत ही अच्छा है॥

(४) जो लोग सन्तानोत्पत्ति के लिये औषधि सेवन कर रहे हैं वह निम्न लिखित औषधियों को प्रयोग में लाते रहें। दूध को औटाते समय उस में ३ माशे से ६ माशे तक यथा स्वभाव कुकम बीज (छुहारे का गून्द) मलमल के कपड़े में बान्ध कर लटका दें। जब देखे कि सारा गून्द दूध में मिल गया तो उस दूध में मिसरी मिला कर पी लिया करें। गोन्द की मल इत्यादिक सब कपड़े में ही रह जावगी॥

(५) मलाई के लड्डू--मलाई बढ़िया आध सेर, घृत पाव सेर और मिश्री एक सेर मिला कर मध्यम अग्नि पर पकावें

जब गाढ़ा होने पर आवे तो छोटी व बड़ी इलायची जावित्री, लवङ्ग, केसर सब एक तोला मिला दें और पांच २ तोला के लड्डू बना लेवें भूख लगे तो एक खालिया करें ॥

(६) पौष्टिक जामन—कौञ्च बीज की गिरी को बारीक पीस कर पानी में गून्ध लें और समतोल खोया मिला कर गुलाब जामन की भान्ति घृत में तल कर मिसरी की चाशनी में डाल देवें। पांच सात गुलाब जामन नित्य प्रति खाया करे। . ही पौष्टिक और शीघ्र पतन तथा प्रमेह नाशक है। यदि जलेबी बनानी हो तो कौञ्च बीज के बराबर गेहूं का आटा (खमीर डाला हुआ जैसा कि जलेबी के लिये होता है) मिला कर जलेबियां तल कर चाशनी में डाल देवे। इन जलेबियों को दूध में डाल कर खाना न्त काम वर्धक है ॥

(७) नारियल को बारीक कुतर कर दूध में मिला कर मध्यम अग्नि पर पकावें जब खीर की न्याई हो जावे तो इस में घृत डाल कर पकने दे जब अच्छी तरह पक जावे मिसरी मिला कर खावे इस खीर के खाने से दुर्बल मनुष्य मोटा हो जाता है। वीर्य पुष्ट होता है और मस्तिष्क में बल आता है ॥

(८) पूड़े—काले तिल, असगन्ध, कौञ्च बीज, खिरारी कन्द सब को सम तोल लेकर चूर्ण बना ले और चूर्ण के समान साठी के चावल पीस कर मिलावे। इस में से दो दो तोले लेकर बकरी व गाय के दूध में पतला २ गून्ध कर पूड़ों की तरह घी में तल ले इन पूड़ों को दूध की खीर के साथ खाया करे तो बल वीर्य्य को बढ़ा तथा शरीर को पुष्ट करने में अद्वितीय है ॥

(९) चनों की दाल— चनों की दाल को रात्रि भर दूध भिगो रक्खें प्रातः सिल बट्टे पर पीठी बनावें उसके घृत में पकौड़े ह

और अभी गरम ही हों कि उनको हाथों से मल कर बारीक करलें फिर घी में भूने। और फिर एक सेर मिसरी मिलावें प्रति दिन दो से पांच तोला तक खावें बड़े पौष्टिक हैं।

अब हम उन औषधियों का वर्णन करते हैं जो साधारण रूप से इन रोगों में हम वर्तते रहते हैं। हमारे पास अनेक रोगों की बहुत सी औषधियां तय्यार रहती हैं। परन्तु उन औषधियो की सम्पूर्ण सूची नहीं हैं, जो साधारण रूप से हितकर हैं उनका वर्णन सेवन विधि समेत नीचे करते हैं। अपनी औषधियों के प्रभावशाली होने के भरोसे पर प्रायः प्रत्येक औषधि का नमूना भी देते हैं, अर्थात् प्रथम इसके कि कोई औषधि आप खरीदें यदि आप उचित समझें तो उसका नमूना मंगालें, फिर हम कहते हैं कि हमारी औषधियाँ स्वयम् प्रशंसा करायेंगी॥

रहे कि औषधियों के साथ कोई पृथक सेवन विधि पत्र नहीं भेजा जाता, प्रत्येक दवाई की सेवन विधि यहां ही लिखी है। और पथ्यादि का नियम पृष्ठ ३३, ३४ पर अंकित हैं, सब के साथ ऐसाही समझें॥

अक्सीर नं० १—(महत् वाजीकरण औषधि) यह दवाई बहुत सी पुष्टि कारक औषधियों का समूह है। यह उन रोगियों को सेवन करना चाहिये जिनको प्रमेह स्वप्नदोष आदि की तो ऐसी बहुत शि[illegible] नहीं है केवल नाताकती (दुर्बलता है)। और यह औषधि धातुपौष्टिक होने के अतिरिक्त वात, कफ के रोग खांसी, नजला, जुकाम, कटिशूल, सन्निवात, छातीदर्द, आदि रोगों को दूर करती है। शीघ्रपतन को भी दूर करती है, और दूध घी इस

के अधिक पचते और बल देते हैं। शरीर में रक्त बढता है और मुखे पर सुरखी आती है मूल्य ६४ गोली ४) नमूना ८ गोली ॥) खूराक एक गोली से तीन गोली तक प्रातः भोजन खाने से प्रथम और रात को भोजन के पश्चात् २ घण्टा का अन्तर देकर दूध के साथ खावें

अकसीर नं० २, (लक्ष्मी विलास रस)—यह औषध शुक्रमेह शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, को गुण करती है, ज्वरादि रोगों के पश्चात् जो दुर्बलता धातु क्षीणता अथवा प्रमेह आदि होजाते हैं, उसको दूर करने में रामबाण है। इसके सेवन करने से बल वीर्य भी बहुत बढ़ता है। जनाव हकीम हीन साहब भूतपूर्व चिकित्सक श्री महाराज जम्मू ने इसके सेवन के जो अनुभूत लिखे हैं वह नीचे अंकित करते हैं:—

सन्निपात—में एक गोली अदरक के पानी के अथवा सोंठ के क्काथ के साथ सायम् प्रातःकाल देवें॥

कुष्ट के लिये—नीम के पत्ते अथवा छाल के क्काथ के साथ एक दो गोली खिलावें॥

प्रमेह—शुक्रमेह व अन्य प्रमेहों पर दूध के साथ एक गोली प्रभात खिलावें॥

भगंदर, ववासीर, नासूर—के वास्ते अर्क सौंफ के साथ खिलानी चाहिये और अंडवृद्धि के वास्ते हड़ के पानी से खिलावें॥

संग्रहणी—अतिसार, रक्तविकार के वास्ते खशखास के डोडो के पानी से खिलावे, अर्थात् डोडो को पानी में भिगो रक्खे और मल छान कर एक वा दोनो समय देवें

खांसी—में हर्ड का चूर्ण १ माशा मिलाकर अर्क गावजुबान के साथ देवें।

रक्तार्श (खूनीबवासीर)—पे शरबत के ॥

जोड़ों की दर्द हो तो अदरख के पानी अथवा सोंठ के काथ के साथ । हकलापन के वास्ते ४ रत्ती वच का चूर्ण मिला कर गरम पानी से खिलावें ॥

गले के दर्द—में मिश्री के साथ देवें । उदर शूल में गरम पानी के साथ चाहिये ॥

कर्णशूल(दर्द कान)—में मको (काच माच) के काथ के साथ खिलावें ॥ आंख पीड़ा करती हो तो घृत के साथ ॥

नासिका की दुर्गन्धि के लिये खमीरा बनफशा के साथदेवें

आंख की दुर्बलता के लिये—घृत के साथ । समस्त आन्तरिक पीडाओं को रोगन बादाम एक तोला के साथ । सिर दर्द के वास्ते शर्बत अनार के साथ । प्रदर में बकरी के दुग्ध के साथ हितकारी है ॥

यह लक्ष्मी विलास रस नारद ऋषि जी ने श्रीकृष्ण जी को बताया था । दूध के साथ सदैव खावे तो वृद्ध भी हो जावे ।

वाजीकरण के वास्ते भी दूध के साथ सदैव खावें तो कामदेव के होजावे । दृष्टि की निर्बलता, मस्तिष्क की निर्बलता आदि दूर हों । मात्रा १ गोली से ३ गोली तक । इसमें विशेष पथ्य की नहीं, बिना संशय आराम करता है, (पथ्यापथ्य देखो पीछे) मूल्य ६४ गोली ४) नमूना आठ गोली ॥)

अकसीर नं० ३—रुक्ष वीर्य्य वाला स्वाभाविक बन्धेज और प्रमेह इत्यादिक रोगोंके नाश करने में अद्वितीय है। मात्रा २ तोले से ४ तोला तक है। प्रातः खिला कर दूध पिलावे। बन्धेज के लिये तीसरे पहर पांच तोला ऐसे ही खिला दें। मूल्य पाव भर का २॥) अर्द्ध पाव का १।) ॥

अकसीर नं० ४—यह बहुत ही उष्ण शुष्क दवाई है। केवल वात, कफ प्रकृति वालों को दी जाती है। इससे बहुत होता है, पेशाव बार २ आना तुरन्त बन्द हो जाता है मूल्य प्रति तोला २), मात्रा आधी रत्ती से४ रत्ती तक दूध के साथ। मूल्य ६४ गोली ४, नमूना आठ गोली ॥)

अकसीर नं०५ चरपाक—यह अकसीर शीघ्र पतन के लिये हैं। ४० दिन तक खाने से सदैव के लिये स्वाभाविक बन्धेज पूर्ण रूपेण उत्पन्न होता है। ऐसे मनुष्य को उचित है कि ४० दिन तक स्त्री गमन न करे। यदि तदुपरान्त ६० दिन और भी मैथुन से करे तो बहुत अच्छा है।इस प्रकार स्वाभाविक बन्धेज जितना कि होना चाहिये उतना ही सदा के लिये हो ज येगा। १५ दिन के सेवन से प्रायः दुगना लाभ हो जाता है। जो अधिक दिन न परहेज कर सकें वह १५—१५ दिन पथ्य पूर्वक कई वार करके खावें मूल्य ३) पाव भर का, मात्रा एक तोला से चार तोला तक हैं ॥

अकसीर नं० ६ नूरुद्दीन का चूर्ण प्रमेह और शीघ्र पतन नाशक तथा पौष्टिक भी है। मुख में सुगंधि होती है, हृदय तथा मास्तिष्क में बल आता है। और २५ दिन के अन्दर बल बढ़ने लग जाता है, पौष्टिक योगों में भस्मों को छोड़ कर सब से बढ़कर है। मात्रा ३ माशा से ६ माशा तक प्रातः दूध के साथ हैं। मूल्य प्रति

तोला ३) रुपया तीन दिन के लिये पर्याप्त है।

अकसीर नं० ७ भस्म संखिया दर्जाखास रतिशक्ति बढाने और सर्व प्रकार की नपुंसकता को दूर करने के लिये अद्वितीय है। मात्रा एक चावल से चार तक है। यह पताशे में डालकर पानी के घूंट से तीसरे पहर को निगल जावें और ऊपर से पाव पाव से सब तक घी व पिपास लगे तो दूध वा जो चाहें तो दूध में घी मिलाकर पी जावें। पित्तज प्रकृति वाले पताशा के स्थान में मक्खन तथा मलाई में रखें। ४८) प्रति तोला, ४) प्रति माशा, चार रत्ती २)

अकसीर नं० ८ (पौष्टिक कसेली)—रति शक्ति बढ़ाने में अद्भुत प्रभाव रखती है। थोड़े दिनों के सेवन से शरीर में शक्ति का संचार होने लगता है। कफज और वातज सर्व रोग नाश हो जाते हैं, शुद्ध रुधिर उत्पन्न होता है। मुख मंडल लाल हो जाता है। गरम मिजाज वालों को तथा ग्रीष्म ऋतु में यह औषधि नहीं खाई जा सकती बहुत ही वाजी करण है मूल्य १६) प्रति तोला १॥ माशा का २) मात्रा अर्द्ध रत्ती से दो रत्ती तक मक्खन मलाई में खावें। दूध का सेवन भी अच्छा है। प्रातः को मध्य न्होतर को दोनों समय अथवा गरमी प्रतीत हो तो केवल तीसरे पहर (मध्य न्होतर) दें

अकसीर नम्बर ९, (हर्ष शंको रस) यह दवाई शीतोष्ण है। जिनको शीघ्र पतन रोग हो उन को दी जाती है। स्वप्न दोष शुक्रमेह को हितकर है। बुढ़ेपन में भी वीर्य गाढ़ा होकर बल उत्पन्न होता है। परन्तु इसका लाभ शनैः २ होता है मूल्य ६० गोली १) नमूना =) खुराक १ गोली से तीन गोली तक॥

अकसीर नम्बर १०—यह वाजीकरण है। जो लोग प्रति

वर्ष एक मास भी सेवन कर छिदा करें तो बल बहुत रहेगा। इसके सेवन से सर्वथा गये गुज़रे मनुष्यों को भी बहुत ताकत होती है। जिनकी रति शक्ति की अधिकता की आवश्यकता है वह इस को खावें। खुराक एक गोली से २ गोली तक पानी में निगल लिया करें और ऊपर से बादाम रोगन खांड मिला कर खालिया करें ऐसा न करें तो दूध पीवें। मूल्य ६४ गोली ४), नमूना आठ गोली ।) यह औषधि मध्यान्होतर खानी चाहिये ॥

अकसीर नम्बर ११—यह अमीरोंके सेवन करने योग्य है। ऐसी औषधि अमीर सदा सेवन किया करते हैं। कभी कोई है कभी सेवन कालीं, यह दवाई शीघ्र पतन नाशक है। प्रमेह, स्वप्न दोष निवारक और बहुत पुष्टि कारक है। हृदय, मस्तिष्क, यकृत आमाशय, मूत्राशय, को बलदायक और सब प्रकार की पुष्टि करता है। प्रधान अवयवों को पुष्टि देता है। इस लिए मृत्यु समय देने से प्राय गरमी आ जाती है। ताऊन के दिनों में इसको खाते रहने से रोग का भय नहीं होता। याकूती का काम भी देती है। जोड़ों के दर्द को हितकर है। और वह सम्पूर्ण गुण भी है जो अनङ्ग विलास रस में वर्णन किए गए हैं। मात्रा एक गोली से ३ गोली तक सायं प्रात. अर्क गावज़ुबान या दूध के साथ खावें, मूल्य ८ गोली १०), नमूना ८ गोली १।)

अकसीर नम्बर १२-(महलवाजीकरण औषधि

यह गोलियां उनके वास्ते है, जो शीघ्र पतन से दुःखी रहते है। यदि तीसेर पहर इसकी १ से ४ गोली तक प्रकृति अनुसार दूध के साथ खावें तो स्तम्भन होता है। यदि १ गोली से २ गोली तक प्रतिदिन ताज़ा दूध के साथ खावें तो धातु गाढ़ा, शीघ्रपतन दूर होती है, वाजीकरण भी है। इस से खांसी, नज़ला, जुकाम, दर्द

कमर, व अन्य रोग, कफज व वातज व बाही रोग, मधु अथवा सोंठ के पानी के साथ खाने से दूर होते हैं, खूराक १ से ४ गोली तक। मूल्य ६० गोली ३) नमूना १० गोली १)

अकसीर नम्बर १३—(महत्‌वाजीकरण) यह साधारण पौष्टिक औषधियों का संग्रह है। इस के गुण देख कर इस के प्रयोग कर्ता की विज्ञता प्रकाशित होती है। यह धातु पौष्टिक है, कटिशूल को हितकर है। खांसी, नजला, गठिया अधरंग, व अन्य पीड़ाओं को दूर करती है। यह उन लोगों को दी जाती है, जिन को धातु क्षीणता के साथ ही मूत्रातिसार भी हो, चार मात्रा से ही मूत्रातिसार बंद होने लगता है, और बल वीर्य ७ दिन के अंदर ही पहले से अधिक मालूम होता है। जो लोग पुष्टि की दवाई हर जाड़े में खाया करते हैं, उनको यह बहुत हितकर है। मात्रा १ माशा से २ माशा तक, प्रातः सायम् पताशे में डाल कर पानी से निगल लिया करें। अथवा वैसे ही खा लेवे। घण्टे डेढ़ घण्टे के पीछे जब यह पच जावे तो दूध जितना पच सके पीवें। दूध पचने की शक्ति दिन प्रति दिन बढ़ती जावेगी। मूल्य आधपाव२), नमूना आधी छटांक ॥)

अकसीर नम्बर१४ (बंद कुशाद औषधि) प्रमेह शीघ्र पतन तथा स्वप्नदोष नाशक है। मात्रा ६ माशा सायं प्रात. दूध के साथ दें। मूल्य पावभर का ३) आध पाव का १॥) है॥

अकसीर नम्बर १५—(मकरध्वज) यह औषधि बल और वीर्य्य का राजा है। इस में चन्द्रोदय, कस्तूरी, भीमसेनी कर्पूर, जायफल, लौंग, समुद्रशोष कालीमिर्च, संयुक्त हैं। चन्द्रोदय नाम रस बेना सहज है, परन्तु असल चन्द्रोदय तैयार करना कठिन है। मकरध्वज खानेसे पहिले पेट शुद्ध करलें, फिर १मर्दाने या कमसे कम

एकमहीने अस्मअभ्रक २रत्ती प्रतिदिन दूध के साथ खावें। तत्पश्चात् ५० दिन रुकी प्रसंग से बच कर इसको खावें। मात्रा एक रत्ती से ७ रत्ती तक है। और दूध घी का खूब सेवनकरें। ताकि अधिक पाचक हो४० दिन के पीछे असल जवानी आजाती है। वीर्य्य सम्बन्धी कोई भी खराबी हो, दूर होकर सन्तान उत्पत्ति के योग्य होता है। हर प्रकार की शारीरिक व मानसिक व धातु की दुर्बलता दूर होती है। बूढ़ा जवान होताहै। मकरध्वज सर्व रोगों को दूर करता है। इसका विस्तृत वर्णन यहां अंकित नहीं हो सक्ता। उचित अनुपान विधि से प्रत्येक रोग पर वर्ता जा सकता है। राजे महाराजे सदैव इसे सेवन करलेथे। इ ा प्रकृति विरुद्ध इतनी रानियां रखने पर भी दुर्बल न । मरते हुए के मुख में डाल दें, एकबार तो अवश्य ईश्वर की कृपा से उठ खड़ा होगा, हम इसके द्वारा कई निःसन्तानों के घर बसा चुके हैं। मूल्य ५०, तोला, साधारण अवस्थाओं में एक तोला पर्य्याप्त होता है। अन्यथा ३ तोला सेवन करें। बस तीन तोला से सब उद्देश्य पूरे होंगे। जो हर वर्ष १ तोला खा छोड़े तो बस क्या कहना है। उनकी आयु बहुत ही बढ़े॥

अकसीर नम्बर १६-(बृहद्वंगेश्वर) इसमें सोना, चांदी मोती, कस्तूरी, वङ्ग अभ्रक, भीमसेनीकपूर, आदि पदार्थ संयुक्त हैं। प्रमेह तुरन्त इस से दूर होता है। दूध के साथ प्रति दिन एक दो गोलियां खायें, धी , स्वप्नदोष, की अधिकता के लिए बहुत हितकर है। शरबत नीलोफर या दूध से दिया करें। जिनके अन्दर वीर्य्य बहुत कम हो, और दुर्बल हों, उनको कुछ दिनों के सेवन से है। जिनकी धातु खराब हो इससे अच्छी होजाती है ज्वरादि के पीछे की दुर्बलता जाती रहती है। हृदय, मस्तिष्क, यकृत को पुष्टिदायक है। जीर्ण ज्वर में भी हितकर है। मूर्छादि चक्कर आना तथा २० प्रकार के प्रमेह की नाशक है। मूत्र स्वच्छ हो जाता

है। ओज, वीर्य्य, बल, रंग, तेज इस से बढ़ता है। इन सब के वास्ते दूध से खिलावें। पाण्डु कामला (यरकान) के वास्ते छाछ के साथ एक गोली रोज़ खावें। जीर्ण ज्वर के वास्ते अर्क गिलोय व अजवायन के साथ एक गोली दिया करें। कफज रोग यथा खांसी, नज़ला, जुकाम में अर्क गावज़ुबान वा अदरक के पानी से देवें। अपाचन, अरुचि, आदि को सौंफ से दिया करें। अतिसार, संग्रहणी, के वास्ते ख़याबग्ग के डोडों के पानी से हितकर है। पुराने सोज़ाक को शर्बत अनार से हितकर है। मूत्रातिसार में पानी से दे सकते हैं। स्त्रियों के सोमरोग पर आंवला के पानी से देवें। यह सुखदायक धातु पौष्टिक इत्यादि है। मूल्य ३२ गोली ४ रु०, नमूना ८ गोली १),

अकसीर नं० १६ (ब) इसमें चन्द्रोदय डाला जाता है मूल्य प्रति गोली १) जो कोई इसका सेवन करता है कभी निर्बल नहीं होता। यह अव्वल दर्जा के मकरध्वज से भी अधिक गुणकारक है। क्योंकि सोने की भस्म भी इसमें मिलाई जाती है मात्रा एक गोली से दो गोली तक दूध के साथ देवें॥

अकसीर नम्बर १७, (बृहदवंगेश्वर मिश्रित)-इस में अकसीर नम्बर १६ की औषधियोंके अतिरिक्त भस्म अकिक, संगयशब फौलाद, मूंगा, मोमयाई, जायफल आदि भी संयुक्त हैं।प्रभाव दोनों दोनों के एक ही हैं, परन्तु यह उनको दिया जाता है जिन को शीघ्र-पतन की अधिक शिकायत हो, और नम्बर १६ उन को दी जाती है जिन को शुक्रमेह की अधिक शिकायत हो, शेष गुण मिलते हैं। मात्रा एक गोली से ३ गोली तक दूध के साथ मूल्य ३२ गोली ४) नमूना गोली १)

अकसीर नम्बर १८ (शिंगरफ भस्म)-यह भस्म विशेष

विधि से तैयार की जाती है, जिन लोगों की नसों पट्ठों की शक्ति सर्वथा न हो, अथवा बहुत कम हो, और कोई खराबी न हो उनको दिया जाता है जो शौकिया बल बढ़ाना चाहे, वह भी इस को खावें। भस्म शिंगरफ़ में परमात्माने विशेष शक्ति भर दी है। सर्वथा नामर्द को मर्द करना इस का काम है। हम ने एक २ दिन इस भस्म से कईयों को योग्य बनाया। बल वृद्धि में अद्वितीय है ४० दिन लगातार इस को खावें, तो सब प्रकार का बल बढ़े और चेहरा पर सुर्खी दीखे। मात्रा एक चावल से रत्ती तक मुनक्का या मक्खन से खावे। ऊपर से थोड़ा गर्म २ दूध घूट कर पीना चाहिये। सब रोग वातज व कफज गंठिया, अधरंग, लकवा दूना, खांसी कटिशूल, दर्द छाती, अपाचन आदि को भी हितकर है। सरदी में शरीर सुन्न होगया हो तो भी दो चार चावल गर्म कर देते हैं, ऐसी सम्पूर्ण अवस्थाओं में मुनक्का में खिलाकर ऊपर से अदरक का पानी या सोंठ का क्वाथ पिलाना चाहिये। मूल्य फी तोला १०) नमूना १मा० १)

अकसीर नम्बर १९, (वंग भस्म दर्जा अव्वल)-यह विशेष भस्म कलई डेढ़ सौ पुट में तो केवल शुद्ध की जाती है। इसके सन्मुख भस्म चांदी भी तुच्छ है। शुक्रमेह और २० प्रकार के प्रमेह दूर करने में रामबाण है, शीघ्रपतन, स्वप्न दोष, को भी हितकर हैं, इस से वीर्य बहुत गाढ़ा होता है। सोजाक और कुर्रेड को भी लाभदायक है। "मर्दको वन्द और घोड़ेको तंग" वाली कहावत इसीपर ठीक आती है। अधिक देर सेवन करने से नपुंसक को भी पुंसक बनाता है। जिसका वीर्य्य पतला हो उस को पुष्टिकर औषधि यथा भस्म शिंगरफ आदि खाने से पहले कम से कम एक मास इसको खाना चाहिये, मात्रा एक रत्ती से ३ रत्ती तक दूध के साथ प्रात या दोनों समय। मूल्य एक तोला १०) ३ माशा २॥) नमूना डेढ़ माशा १।)

अकसीर नम्बर २०, (मन्मथ रस)-यह रसायन शिवजी महाराज ने निर्म्मित की थी, इस से बूढा भी जवान हो जाता है, और जो हर साल खाये वह कभी कमजोर नहीं होता। वाजीकरण कल्पद्रुम में लिखा है:-कि हमेशा इस को वही खावे जिसके पास बहुत सी स्त्रियां हों। इस में यह गुण है कि यह तेज नहीं है। क्रमशः गुण करता है और देर तक प्रभाव रहता है। हमेशा खाने से कोई हानि नहीं होती, धीर्यपतन, शुक्रमेह, स्वप्नदोष आदि का नाशक है। पाचन शक्ति को बढ़ाता है, रुधिर को उत्पन्न करता है। पाण्डु या कामला (यरकान) कास श्वास, जुकाम आदि को दूर करता है। पुष्टि दायक और स्तम्भन कारी है। जब इस औषधि को मैंने समाचार पत्र में लिखा तो बम्बई के एक ७० वर्ष के वृद्ध ने जो २२ बच्चों का पिता था मुझ को लिखा कि यह योग मुझ को पहले से मालूम था यह युवावस्था से प्रत्येक जाड़े में दो सप्ताह इसके सेवन का अभ्यासी है जिस का फल यह है, कि अब भी सन्तान उत्पत्ति के योग्य है। मात्रा एक गोली से ४ गोली तक गरम दूध के साथ खावें। ऊपर से पान चबावें तो अच्छा है। मूल्य ६४ गोली ४), नमूना गोली ॥)

अकसीर नम्बर २१ (४)रूपे या रस-वाजी करण-वलवेज दती धीर्यपतन तथा प्रमेह नाशक है बहु मूत्र को भी गुण करती है मात्रा अर्द्ध रत्ती से एक रत्ती तक मक्खन या मलाई में, मूल्य १५) तोला नमूना १॥ माशा २) ६ माशा ७॥) है ॥

अकसीर नम्बर २२ (तालेश्वर रस)-उपरोक्त गुणों के अतिरिक्त यह अधिक तेज है और दूध घी पचाने में मकबूल है। मात्रा ½ रत्ती से १ रत्ती तक मक्खन में। मूल्य तोला १५)

औषधि मिलने का पता अमृत धारा लाहोर।

अकसीर नम्बर २३-दूध घी पचाने के लिये औषधियां प्रायः सीघ्र हुआ करती है, परन्तु यह विचित्र औषधि है। यह ऐसी चीज से तैयार की गई है, जिसको प्रत्येक मनुष्य दैनिक है। दूध घी पचाने की शक्ति दिन प्रति दिन बढ़ती जाती है, यहां तक कि सेरों की नौबत पहुंच जाती है, ऐसे मनुष्य की शक्ति कितनी होगी प्रत्येक मनुष्य समझ सक्ता है॥

मात्रा १ चावलसे ६ चावल तक एक दिन में, ४,५ चावल प्रति दिन खांड में मिलाकर हमने एक महाशय को ४० दिन खिलाया, वह आजकल २,३ सेर दूध दैनिक पचासकते हैं। पहिले शरीर में मांस का नाम न थो,अब खूब मोटे ताजे हैं। छटांक भर दूध भी पहले न पचता था, अब सेरो पीते हैं। जब दूध और घी पचे तो इससे बढ़ कर शक्ति किसमें है। पताशा व खांड में डाल कर २,३, घूंट दूध से निगल जावें। अधिक दूध तब पीवें जब उसको इच्छा प्रतीत हो। दिन मे २,३ बार थोड़ा २ पिया करें, फिर दिन प्रति दिन बढ़ाते जावें १४ दिन के पीछे ऐसा गुण जाहिर होगा कि हैरानी होगी। इसमें गर्मी तेजी नहीं है। और गुण इतना कि जो ७० दिन खा लेवे तो बस फिर कहना ही क्या है। सर्व रोग कफज सन्निपात आदि को हितकर है। मात्रा एक चावल से ६ तक, मूल्य प्रति तोला ५) रुपये ३ माशा १।)

अकसीर नम्बर २४ (हबूब खुशकुन)-मात्रा की कोई विशेष सीमा नियत नहीं की जा सकती, जिन लोगों ने स्तम्भन की दवाई अभी तक नहीं खाई उन को एक गोली भी अधिक है, आधी खानी चाहिए, हां अगले दिन अपनी प्रकृति का अनुमान करके खुराक अधिक की जा सकती है, और जो स्तम्भनौषधियों के अभ्यासी हैं, वह आठ २ गोलियां भी खा जाते हैं, इसी प्रकार जिनकी प्रकृति

कफज या वातज है, वह अधिक खा लेते हैं। परन्तु गरम प्रकृति वाले को एकाध गोली ही पर्याप्त होती है। सत्य तो यह है, कि एक दिन

इसकी मात्रा नियत करनी चाहिए, साधारणतः ऐसी गोलियां बल को हानि पहुंचाती हैं, हमने इस में ऐसी औषधियां प्रविष्ट करने का उद्योग किया है कि जिससे बलको हानि नहीं होती। यह बात स्मरण रखने की है कि दैनिक स्तम्भन के वास्ते गोलियों का सेवन न करना चाहिये, यदि मनुष्य तुरन्त स्खलित हो जावे, और औरत न हो तो सन्तान उत्पन्न नहीं हो सकती, यदि उत्पन्न हो तो नपुंसक होती है। स्त्री खुश न रहने से घर में सुख नहीं होता है, इसी प्रकार शीघ्रपतन के रोगियों को अपने रोग का इलाज कराते हुए जब तक आराम न आवे, कभी २ आवश्यकता पड़ जावे तो ऐसी गोलियों की आवश्यकता होती है, इस लिए यह गोलियां परोपकारार्थ बनाई गई हैं। जो आनन्द के पीछे पड़कर इसको सेवन करेगा निःसन्देह हानि उठावेगा, हम अनुचित इसकी प्रशंसा नहीं कर सकते। सारांश यह कि स्तम्भन की गोलियां सदैव सेवन करना हानि कारक है। खाने की विधि यह है, कि १ या २ गोली प्रकृत्यानुसार लग भग ५ बजे पानी के साथ और यदि प्रकृति गरम है तो थोड़े से दूध के साथ या मलाई के साथ निगल जावें, ६ बजे एकाध गोली और खाई जा सकती है, (यह खुराक बलवान की है, निर्बल को पहिले कम खाकर अनुमान कर लेना चाहिए, अभ्यासी इस से अधिक खा सकता है) १० बजे मैथुन करना चाहिए, मैथुन पीछे गरम किया हुआ दूध मिश्री डाल कर जितना पिया जा सके पीवे जिस से कब्ज न हो॥

गोली खाने के पीछे खाना नहीं खाना चाहिए, और यदि क्षुधा लगे तो खीर या आदि मीठी वस्तु थोड़ी सी खाना चाहिए, या खाना २ घण्टे प्रथम खाया जा है। इस बात का ध्यान रखना चाहिए, कि गोली खाने के पीछे कोई वस्तु ऐसी न खाई जावे जो खट्टी या नमकीन हो, नहीं तो उद्देश्य पूरा न होगा॥

इन गोलियों से चौगुना बन्धेज होती है, जिनको शीघ्रपतन का कठिन रोग है, उनको चौगुना समय भी हो जाय क्या मालूम होगा वाजों का अभ्यास हो जाता है, कि पहिली बार शीघ्र स्खलित होकर दूसरी बार यथा इच्छा बन्धेज होता है, मूल्य ३० गोली २) नमूना।

नोट—यही बातें जो इसके विषय में हैं अन्य स्तम्भकौषधियों यथा अकसीर नं० ४१,४२,४३, के विषय में समझ लें ॥

अकसीर नम्बर २५, (त्रिधाता भस्म–बङ्ग, सीसा, जस्त)–यही भस्म है कि जिसको बहुत से लोग भस्म सोना का कर बेचते हैं। क्योंकि इसका रंग पीला होता है। सदैव का स्तम्भन इससे उत्पन्न होजाता है। क्योंकि वीर्य्य को गाढ़ा करने में अद्वितीय है। शुक्रदोष,वा भीशय रोग के लिए सीर है, यदि त्रिल मक्खन में डालकर खिलावे, और नमक से परहेज रक्खें, तो धातु जाना तुरन्त दूर करे। और पुष्टि भी बहुत करता है। मात्रा ½ रत्ती से २ रत्ती तक, मक्खन या दूध के साथ। मूल्य प्रति तोला ५), ३ माशा १), डेढ माशा ॥)

अकसीर नम्बर २६, (स्वर्ण भस्म दर्जा अव्वल) चन्द रत्ती भी जो इस भस्म को खावे इस का प्रशंसक बन जावेगा बूढ़ा भी जवान हो जाताहै। हृदय, मस्तिष्क, यकृत, गुर्दे आमाशय मूत्राशय, मसानाकुरा, सब को विशेष शक्ति देती है। एक जाडे यदि ३ माशे भी सेवन करलें, तो वर्षों की नष्ट हुई २ शक्ति लौट आवे। पट्ठों को पुष्टिदायक, वीर्य्य उत्पादक, घी दूध को पचाने वाली है। जब मक्खन में खाना आरम्भ किया जाता है, तो जिनको मक्खन नहीं पचता वह थोडे दिनो के पश्चात पाव २ मक्खन एक समय में खा लेते हैं और पता नहीं लगता कहां गया। अग्नि को बढ़ाने और स्थिर रखने वाली है। बूढ़ों की लाठी और नि:सन्तानों को सन्तान देने वाली है ॥

मात्रा एक कशकाश से चार चावल तक बी। मक्खन या मलाई में डाल कर निगल जावें, पश्चात्, उसी समय या आध घण्टा पीछे दूध जितना पचा सके पान करे। यदि, आमाशय का ध्यान हो, तो फिर प्रति मात्रा वंशलोचन २ रत्ती दाना इलायची ३ रत्ती, जवा-रिश मस्तगी २ रत्ती मिला लिया करें। उचित अनुपान विधि से कफज रोगों को हितकर है। मूल्य ८०)फी तोला, नमूना ४ रत्ती ४) दर्जा दोयम ४०) तोला मिलता है॥

अकसीर नम्बर २७, [अब निर्बल न होंगे]—यह गोलि-यां प्रमेह, और शीघ्रपतन नाशक है धातुपुष्ट करके शुद्धरक्त उत्पन्न करती हैं विशेषकर स्खलित होने के पीछे एक गोली खाने से सारी सुस्ती जाती रहती है, और तीसरे पहर ३ गोली खाने से बन्धेज होता है। दैनिक खाने से शुक्रदोष दूर होता है। मात्रा१से ४ गोली तक दूध से खावे। भोग के पीछे की निर्बलता दूर करने के लिए विशेष रूप से हितकर है दूध प्राप्त न हो तो वैसे ही खावे, हृदयरंजन पुष्टि दायक है। मूल्य ६० गोली १) नमूना ≈)

अकसीर नम्बर २८, [तैलमालकङ्गनी]—कफज रोग नाशक, धातु व मस्तिष्क पुष्टिकारक है, स्मरण शक्ति को बढ़ाता है जिसकी स्मरण शक्ति निर्बल है वह अवश्य सेवन करें, नेत्रों की निर्बलता को भी हितकर है हथेली मलें तो आंखों में ज्योति आवे, स्तम्भनके लिए भी अद्वितीय है। दर्द कमर, अन्य अंगों का पीड़ा, गठिया आदि को हितकर है। मालिश भी की जाती है। हस्तकार को इसका तिला कराते हैं, दर्दस्थान और चोटस्थान पर मलने से आराम आता है मात्रा २ बूंद से ६ बूंद तक पताशा में डालकर

ऊपर से दूध पीवें। कफ प्रकृति और स्त्रों के वास्ते पान से खावें मूल्य प्रति शीशी ८ की ड्राम।) नमूना ०)

अकसीर नम्बर २९, [जिरियान की दवाई] यह औषधि विशेष रूप में शुक्रमेह को हितकर है, विशेषतः उनको जो कफज प्रकृति वाले हैं। शीघ्रपतन और स्वप्नदोष नाशक है, और पुष्टि कारक है, मात्रा १ गोली से २ गोली तक दूध के साथ। मूल्य ३२ गोली २), नमूना ४ गोली।)

अकसीर नम्बर ३०, [धातुवर्द्धक]—यह औषधि विशेष रूप से उनको हितकर है, जिन के वीर्य्य कम हैं, अथवा कम उत्पन्न होता है। इससे वीर्य्य बहुत ही पैदा होता है, थोड़े दिनों के पश्चात् बल भी बढ़ने लगता। शुक्रदोष, स्वप्नदोष शीघ्रपात को हितकर है। शुक्रजनक हितकर बूटियों का संग्रह है। मात्रा ६ माशा से १ तोला तक, दूध के साथ, रात को सोते समय खावें। मूल्य फी पाव २), नमूना २ तोले ॥)

अकसीर नम्बर ३१ (चन्द्रप्रभा गुटिका)—इस औषधि से २० प्रकार के प्रमेह यथामूत्रमेह, मूत्र में शक्कर का आना, पीतरंग का मूत्र होना, मूत्र के साथ धातु जाना, मूत्र का रुक जाना या जलन या दर्द के साथ आना, दूर होता है। पथरी को भी हितकर है। प्रमेह के पीछे जो शरीर पर फुन्सियां निकल आती हैं उनको लाभदायक है। अशशारा, वीर्यवद्धता, शूल, आनाह, अण्डवृद्धि अण्डकोष की शोथ आदि को गुणकारी है, पांडु कामला, मुख की स्याही को दूर करता है। बवासीर, भगन्दर, नासूर, कमर दर्द, दमां, खांसी, नजला कफजरोग का नाशक है। स्त्रियों के मासिक धर्म सम्बन्धी रोग और पुरुषों के धातु रोगों को दूर करके सन्तानोत्पत्ति के योग्य है। दन्त और नेत्र रोगों में भी हितकारी है। शुक्रदोष,

शीघ्रपतन, को दूर करे है। मात्रा १ गोली से ५ गोली पानी के साथ खाया करें पश्चात् दूध पीवें, । शुक्र रोगों में दूध के साथ, बवासीर के साथ बासी पानी, खूनी बवासीर में दही के मट्ठे, भगन्दर और अण्ड वृद्धि में त्रिफला के फल से प्लीहा में सिकंजवीन, कामला में छाछ पीडाओं में अदरक के पानी के साथ दे सकते हैं। मूल्य ३१ गोली १), नमूना ८ गोली ।)

सीर नम्बर ३२, (शाही नुसखा)—इस नुसखे में कोई धातु नहीं डाली जाती तो भी इसके सेवन से रूप जीवन व तेज की वृद्धि होती है। रक्त बहुत पैदा होती है। सच्ची भूख लगती है। पुष्टिदाता, वीर्य्यवर्द्धक, कामोत्पादक, दृष्टि वर्द्धक और हृदय मस्तिष्क, यकृत, को बल देने वाला है॥

आमाशय और मूत्राशय को पुष्टि देने वाला, और अन्न पाचक है। शीघ्रपतन, कमर का दर्द, निर्बलता, के वास्ते गुणकारी है। रक्त शोधक है। वाजीकरण है॥

सदा सरदियों में इसका सेवन करने वाला प्रबल और रहता है। और स्वाभाविक स्तम्भन होता है॥

मात्रा—गरम प्रकृति के वास्ते ३ माशा। कफज प्रकृति के वास्ते १ माशा ताजे वा उबाले हुये दूध से हर रोज खावें॥

१४ दिन के अन्दर २ अच्छी तरह काफी फर्क मालूम होगा। पथ्य आदिक जो पीछे लिखे हैं वैसे ही है। हां यदि लवण न खावें और गेहूं की रोटी घी से चुपड़ कर चूरी या चूरमा बनाकर खावें और गिरियां दूध, घी, मक्खन, मलाई, इत्यादि का सेवन करें, तो बहुत शीघ्र लाभ देखें, और दुर्गन्धि आदि जाती रहे। प्रकृति) अनुसार मात्रा न्यूनाधिक कर सकते हैं। मूल्य ४) नमूना ॥)

अकसीर नम्बर ३३, (आयुर्वैदिक टानिक)—आयुर्वैदिक टानिक मैंने इसका नाम इस वास्ते रक्खा है, कि अंग्रेजी टानक औषधियों से इसका मुकाबिला किया जावे। सचमुच ही आयुर्वैदिक टानिक सब से बढ़कर रहेगी। मात्रा ½ से २ तोला तक है, वीर्य सम्बन्धी रोगों के विषय में इसकी सेवन विधी इतनी ही पर्याप्त है, कि प्रात भोजन के पहले और रात को सोते समय इसको दूधसे खावें। यदि सन्तान न होती हो, तो स्त्री पुरुष दोनों एक या दो मास तक दूध से इस को सेवन करे। प्रत्येकऋतु-स्नान के पीछे गर्भाधान किया जावे, तो, दो तीन मास में परमात्मा इच्छा पूर्ण करें। स्त्री पुरुष के रज व वीर्य्य के दोषों को दूर करके सन्तानोत्पत्ति के योग्य बनाता है॥

पुष्टिकारक है। वीर्य स्राव, स्वप्नदोष शीघ्रपतन को दूर करता है। शुद्ध रक्त उत्पन्न करता है। शारीरिक बलको बढ़ाता है। हृदय मस्तिष्क, और यकृत को पुष्ट करता है। वात प्रकृति वालों को विशेषतः गुणकारी है इसके सिवाय निम्न लिखित रोगों में भी गुणकारी है.—

गठिया, घुटने, कमर पसली व छाती का दर्द, रीघनवायु आदि सर्व वातज रोगों के वास्ते गोली सायम प्रात गरम पानी के साथ खावें, या मधु तथा अद्रक के रस अथवा सोंठ के काढे से खावें, घी का सेवन रक्खें, दूध कम पीवें॥

मधुमेह:—मूत्रातिसार और उस मे शक्कर अलब्यूमन आदि का आना,-हरड़ का छिलका, आमला, दारुहलदी, नागरमोथा देवदारु प्रत्येक दो माशे चार गुना पानी मिलाकर क्वाथ बनावें, और छान कर मधु मिलाकर उसके साथ मात्र १ गोली खाया करें॥

मोटापा—मधु ३ तोला पानी में घोलकर उसके साथ १ या दो गोलियां प्रातः निहार मुख खावें और स्निग्ध (Fats) वस्तु से परहेज करें। व्यायाम खूब किया करें॥

पांडु, कामला, हलीमक:—एक गोली गोमूत्र के साथ खाया करे। या कासनी के रस से या कासनी के अर्क से ही खावे। कोष्ठबद्धता हो तो उसको दूर करले छाछ भी हितकारी है॥

श्वेत कुष्ठ नवीन—निम्ब के छिलके के काढ़े में रोज एक या दो गोलियां खाया करें॥

सूजन तथा शोथ—सौंफ, मको, तथा कासनी के अर्कों को मिलाकर सायम प्रातः खिलावें॥

जलोदर, कठोदर—पुनर्नवा, (इटसिट) की जड़ ६ माशे लेकर उसको क्वाथ करके उसके साथ एक या दो गोली खिलाया करें॥

नेत्र रोग—त्रिफला के पानी में मधु मिलाकर उससे १ गोली खाया करें। और घी का खूब सेवन करे॥

चूहे का विष और प्लेग—घी के साथ १-१ गोली प्रातः मध्याह्न सायम को देवें। ईश्वर कृपा करेगा॥

प्रदर—रसौत, बिलगिरी, दारुहलदी चिरायता समान भाग में मिलावें। और २ माशे एक गोली के साथ मिलाकर बकरी के दूध या पानी के साथ खावे या उपरोक्त चीजें २-२ माशे लेकर क्वाथ करके इससे खिलावें॥

ऋतु अभाव—सौंफ, सोये, गावजुबान, प्रत्येक ६ माशे लेकर क्वाथ बना कर इसके साथ रजस्वला होनेके सात दिन पहिले

आरम्भ करें। और जब तक ऋतुस्राव होता रहे सेवन किया करे। इसीतरह जब तक सर्वथा आराम न हो प्रति मास किया करें॥

अण्डकोश की शोथ—त्रिफला के काढे के साथ देवें॥

अण्डवृद्धि—त्रिफला के काढे के साथ सायम प्रातः एक गोली खिलावें॥

कण्ठमाला—कचनार के वृक्ष के १ तोला का बनाकर उसके साथ १ गोली प्रात. तथा १ सायम् को खावें। घी के साथ खाने से भी गुण करेगी। मतलब यह है कि इस दवाई को योगवाही कहा है। और बहुत से रोगों को गुणकारी है॥

रोग—यथाः-कफ शुष्क खांसी श्वास, जुकाम, नजला आदि मे पिपलामूल, नागरमोथा, बडी हरड, प्रत्येक २ माशे के काढे के साथ देवें। योगवाही का मतलब यह होता है कि जिस अनुपान के साथ दी जावे उस बीमारी को गुण करती है। बस अपनी बुद्धि के अनुसार अन्य रोगों में भी बरत सकते हैं। और उपरोक्त रोगों में अपनी बुद्धि के अनुसार अनुपान बदल सकते हैं। सर्व प्रकार की शक्ति के वास्ते दूध से सायम प्रात खानी चाहिये। गरमी में यथा गरम प्रकृति वाले इसबगोल की भूसी ३ माशे मिला लिया करें। मूल्य ६४ गोली ४), नमूना ८ गोली ॥),

सीर नं० ३४ (शुक्रमेह की अनुपम औषधि)—वीर्य्य स्राव के वास्ते यह औषधि अद्वितीय है। शीघ्रपतन और दोष को भी दूर करके सदैव का स्तम्भन प्रदान करती है, वीर्य्य गाढ़ा होकर सन्तानोत्पत्ति के योग्य बनता है। यह दो प्रकार की तैयार की जाती है। अफसीर नं० ३४ (क) और अफसीर नं० ३४ (ख), (ख) में वही औषधियां हैं जो (क) में हैं। परन्तु उनके सिवा कस्तूरी, अन-

खिसभीती दास्सर, शिलाजीत हर्षर्ण और रौप्य भस्म, कृष्णाभ्रक भस्म, भीमसेनीकपूर, आदि विशेष हैं। जिससे यह उपरोक्त गुणों के अतिरिक्त हृदय, मस्तिष्क मूत्राशय, यकृत और आमाशय को भी पुष्टि देता है ॥

अमीरों के खाने योग्य है। स्तम्भन शक्ति स्थिर होती है। अफीम का इसमे नाम तक नहीं। फिरभी इससे उत्तम बन्धेज करता है। धातु जानो इस तरह भागता है जैसे गर्दभ के शिर से सींग। सर्व शरीर के पट्ठे, मांस पिंड, जोड़ इससे गठे हुए रहते हैं। मात्रा १-१ गोली सायम प्रात ॥

यदि पित्त प्रकृति हो तो ३ माशे ईसबगोल की भूसी में १ गोली रख कर शरबत नीलोफर या दूध से खा जावें। अगर शीत प्रकृति हो तो पानी से एक गोली सायम प्रात: खावें। अथवा केशर, जायफल, जावित्री, तज, दालचीनी, लौंग, समान भाग मिलाकर रखें। और आध रत्ती इस चूर्ण के साथ १ गोली मलाई में रख कर खा जाया करें। जब वीर्यस्राव दूर हो जावे. तो पुंसत्व के वास्ते इन गोलियों को दूध से खाया करें। मूल्य अक्सीर नं० ३४ (क), ३२ गोली का २।, नमूना आठ गोली ॥)मूल्य (ख) ३२ गोली ५) नमूना८ गोली १।)

अक्सीर नं० ३५ (लोहासव)-पौष्टिक व पट्ठों की शक्ति देने में अनुपम है। शुद्ध रक्त पैदा करके थोड़े दिनों में सुर्ख करदेता है। शारीरिक शक्ति को बढ़ाता है, निरंतर सेवन किया जावे तो बालो को श्वेत नहीं होने देता। गंठिया व अन्य वात कफ रोगों को हितकारी है सुस्त पट्ठों को चेतन्यता देने में अनुपम है। यकृत रोग, श्वास, खांसी, कफ, वीर्य रोग, रींगनवायु, आदि के वास्ते रामबाण है। मात्रा जवान के वास्ते ३ माशे साधारणतया है। परन्तु २ माशे से आरम्भ करके प्रकृति के अनुकूल१ माशे तक बढ़ा सकते हैं सर्दियों

में अधिक गुणकारक है। रात को सोते समय चमच में डालकर पी जावें और ऊपर से दूध पीलें। मूल्य दो औंस का २) रुपये, नमूना ॥)

अकसीर नं० (३६)—सुस्त पट्ठों को तेज बनाने में अनुपम है। जिनको केवल मैथुन शक्ति की शिथिलता होवे इस तेल का सेवन करें। खाने और लगाने दोनों काम देता है। रग और पट्ठे फिर से जीवित होजाते हैं। (nervous debility) के वास्ते कोई डाक्टरी दवाई इसकी बराबरी नहीं कर सकती, एक दो हफ्ते में ही आश्चर्य्य जनक मैथुन शक्ति पैदा होने लगती है। अचेत सचेत, और कायर शूर होते हैं। खाने के वास्ते इसकी मात्रा १ बूंद है। परन्तु पहिले रोज बहुत थोड़ी एक तिनका को लगाकर तिनका मक्खन में पोंछ दें। और मक्खन को निगल जावें इसी तरह रोजाना थोड़ी बढ़ावें, यहां तक कि प्रकृति के अनुसार बून्द से ज्यादह भी खा सकते हैं। १४ दिन सेवन करके १ सप्ताह छोड़दें। फिर भी यदि इच्छितफल प्राप्ति न हो तो इसी तरह और सेवन करें। दूध घी मक्खन मलाई का खूब सेवन रक्खें। लगाने के वास्ते २—३ बूंद इन्द्रिय पर लगाकर उंगली से धीरे धीरे २ दो चार मिन्ट तक मालिश करें। अण्डकोश व सीवन को न लगने दें। और ऊपर से पान अथवा का पत्ता या भोजपत्र बांध दें। सेवन समय इन्द्रीय को पानी से बचावें। तेज नहीं है, यही तो खूबी है कि उपाड न करते हुए भी पट्ठों को मजबूत करता है। सर्दियों में इसका सेवन अधिक उप-उपोयगी है। कफज, वातज रोग, गठिया, घुटने का दर्द, शीघन वायु, दमा, खांसी, अशक्ति पट्ठों की निर्बलता आदि को हितकारी है। एक शीशी के ५) रुपये नमूना ।॥) ॥

अकसीर नम्बर ३७ [कुचलापाक]—यह एक पुराना प्रयोग है। अत्यन्त वाजीकरण है। कमर के दर्द को दूर करता है। बूढ़ों और शीत प्रकृति वालों को बहुत ही अनुकूल है। ४० दिन

खाने से गये गुजरे को पहलवान बनाता है बुड्ढा पट्ठों को ताकत देने के वास्ते प्रसिद्ध ही है, डाक्टरी में इससे बढ़कर कोई चीज पट्ठों को उभारने वाली वर्णन नहीं की है। मात्रा २ माशे खाकर ऊपर से दूध पीवे। या तीसरे पहर को खाया करे। कीमत की पाव ८), नमूना १) रु हमने अपनी बुद्धि से अत्यन्त कड़वे कुचले को मीठा कर दिया है॥

अकसीर नं० ३८, (शीघ्रपतन का इलाज)-यह दवाई हृदय और मस्तिष्क को शक्ति देती है। तबियत खुश रखती है आनंद जनक और ताकत के वास्ते विशेष रूप से तयार की जाती है। १ गोली को थोड़ा पीस कर आध सेर दूध में डालदें। और आग पर रखदें, १-२ उबालें आजावें तो दूध का रंग पीला हो जायेगा, तब जरा ठंडा करके मिश्री मिलाकर पीजावें, प्रातः या रातको सोते समय जैसे सुभीता हो। गरम प्रकृति वालों को १ गोली पर्याप्त है, शीत प्रकृति वाले १—२ गोलियां भी खा सकते हैं १५ दिन के पश्चात् आगे से दुगंना स्तम्भन होगा, और ज्यों २ सेवन करेंगे ज्यादह ही होता जावेगा। मूल्य ६४ गोली २), नमूना १६ गोली ॥)

अकसीर नम्बर ३९, [वीर्यवर्द्धक, पुष्टि दायक और शीघ्रपतन निवारक]—यह दवाई शीघ्रपतन के वास्ते अकसीर नं० ३८ की तरह विशेष हितकर है, विशेषता इस मे यह है, कि यह वीर्य को खूब पैदा करती है, और गाढ़ा करती है, शारीरिक शक्ति को बढ़ाती है, और कामोत्तेजक भी है, मस्तिष्क को दृढ़ करती है, दिमागी काम करने वाले के वास्ते न्यामत है। स्तम्भन होता है, क्योंकि वीर्य उत्पन्न होने के साथ २ गाढ़ा भी होता जाता है, वीर्य स्राव को दूर करती है और इतना गुणकार होते हुए भी विष्टम्भी नहीं है, मात्रा ६ माशा से १ तोले तक है। साधारणतया १ तोला मलाया ठीक होता है, आध सेर या तीन पाव दूध ओंटकर उस में डालें, और

दूध को अग्नि पर रक्खें, और जैसा गाढ़ा हो जावे और नर्म न रहै उतार कर खांड मिलाकर खाजावें, स्वादिष्ट होगा। (अगर शारीरिक और मस्तिष्क की शक्ति बढ़ाने की इच्छा हो तो खीर की तरह गाढ़ा हो जाने के पश्चात् इसमें आधे पाव या छटांक घी डालकर भूनें जैसा कि खोवा भूना जाता है, लाल होजावे तो उतारकर मिश्री या खांड मिलाकर खा जावें, इस तरह घी में पकाया हुआ दो चार सप्ताह पड़ा भी रहै तो खराब नहीं होता, मूल्य १ पाव का २) नमूना १ छटांक ।।) आठ आना ॥

अकसीर नम्बर ८०, [स्वप्नदोष निवारक]—यह दवाई विशेषरूप से स्वप्नदोष के वास्ते तय्यार कीगई है, यह वीर्यस्राव और शीघ्रपतन को भी नाशक है। यदि आवश्यकता प्रकृति अनुसार दो तीन गोलियां दूध या मलाई से खावें तो स्तम्भन भी होता है। १ मास के सेवन से स्वप्न दोष की अधिकता जाती रहती है। सदा के वास्ते तो स्वप्नदोष बन्द हुआ नहीं करता, मात्रा स्तम्भन को दो तीन गोलियां। और स्वप्नदोष वगैरह के वास्ते १ गोली तीसरे पहर को आध पाव गरम दूध से या थोड़ी मलाई या केवल पानी से खा लिया करें। मात्रा ½ गोली से २ गोली तक है, १२ गोली २) नमूना ८ गोली चार आने ॥

अकसीर नं० ८१, (कामिनी वशीकरण)—यह दवाई अमीरों के वास्ते है इसका सब से मुख्य फायदा यह है, कि यह शीघ्रपतन को दूर करती है, जो लोग कहा करते हैं, कि उन्हें स्तम्भन नहीं होता, वह जरा इसे आजमा देखें, तीसरे पहर को एक गोली थोड़े दूध के साथ खा लेवें, कोई नमकीन या खट्टी वस्तु न खावें, दूध, मलाई आदि खा सकते हैं, जैसा अकसीर नं० ८४ के वर्णन में लिखा गया है। इस से द्विगुणा स्तम्भन होगा। यह मलावरोधक है, इस वास्ते पीछे से गरम दूध पीवें, सब हज़म हो जावेगा, और सुन्दर कामोत्पन्न

भी कम होगी, एक गोली तो बड़े जवान की खुराक है। साधारण मनुष्य को आधी गोली ही पर्याप्त है॥

यह गोलियां रोज सुबह दूधके साथ एक मास तक सेवन की जावे तो शीघ्रपतन दूर होता है स्वप्नदोष और धातुपात का सत्यानाश हो जाता है, थोड़े ही दिनों में शक्ति बहुत बढ़ती है, सुबुद्धि पैदा होती है, नित्य सेवन के लिए ½ से ¼ गोली तक देनी चाहिये। हमने कस्तूरी, सोना, चांदी, मोती, केसर, अम्बर, मोजहेनोफाफ़र इत्यादि चीजें सम्मिलित की हैं, जिनको ईश्वर ने सामर्थ्य दिया है उन्हें चाहिये कि साल में १—२ मास जरूर इस औषधि का सेवन किया करें पूर्ण शक्ति प्राप्त होती है, मूल्य एक गोली का एक रुपया। ३० गोली का २५)रु० ॥

अकसीर नं० ४२, (अनुपम औषधि)—यह दवाई हमें बहुत थोड़े समय से मिली है और हमारा दावा है, कि स्तम्भन करने वाली ऐसी दूसरी दवाई इसकी बराबर नहीं मिलेगी। स्तम्भन की औषधियां कब्ज करती हैं, जब कि यह उलटा कब्ज को तोड़ने वाली है, स्तम्भन की औषधियां अधिक सेवन करने से पथरी आदि रोग करती हैं, परन्तु यह उलटा पथरी को तोड़कर पेशाब साफ लाती है, स्तम्भन की औषधियां मादक होती हैं और पुरुषत्वशक्ति को हानि पहुंचाती हैं, परन्तु यह मैथुन शक्ति को बढ़ाती है, और पट्ठों को ढीले नहीं होने देती, स्तम्भन दवाइयां सिर दर्द करती हैं, यह ऐसा भी कुछ नहीं करती, है, यह साधारण रोज की खाने की चीज है आश्चर्य होता है, कि इस विषयपर लाखों नुस्खे लिखे गए परन्तु न जाने यह छोटी सी चीज क्यों किसी को न मालूम हुई, ऊपर लिखे गुणों के अतिरिक्त इससे वजन भी खूब होता है, ३—४ गुण

तो साधारण] बात है ।] इस की मात्रा चार से आठमाशे तक होजो जवान आदमीहैं, वह आठमाशे पहले ही दिन खा सकतेहैं, परन्तु पहले कम अर्थात चार पांच माशे खानी चाहिये । सायम् समय शहद में मिलाकर खा जावें, खट्टी खारी चीजों तक का स्पर्श न करें, १० बजे के अन्दाज में इसका प्रभाव होगा । इसको प्रति दिन भी खाया जा सकता है जब कि यह शीघ्र पतन की उत्तम औषधि प्रमाणित होगी मात्रा ६ माशा प्रातः और ३ माशा सायं शहद में चटे या दूध से खाये यदि एक ही समय खानी हो तो ९माशा खावे इस अजीब वस्तु की कीमत हमने बहुत न्यून रक्खी है, इस दवाई की माजून तैल आदि बनाने की हम तयारी कर रहे हैं । आठ तोले दवाई की डिबिया के दो रुपये । एक तोला नमूना के चार आने ॥

अकसीर नं० ४३—अत्यन्त स्तम्भक— यह अकसीर नंबर ४१ से भी बढ़ कर है । आठ गुना तक स्तंभन होता है । जिन को पहिलेही काफी पेचेस है उनको नशा तुर्शी(अब तक खटाई न खाई जाय माशिक चावल मामिला) समझें । मात्रा १ गोली कच्चा काती चाहे तो अभ्यासीनहीं हैं प्रथम अर्द्ध गोली सेवन करें, जो अभ्यासी हैं वह दो गोली भी खा सकते हैं, शेषविवरण देखो अकसीर नं २४ के बयान में ।

अकसीर नं० ४४, (फलकसैर)—इसके गुण नाम से प्रगट है । इसके खाने से हर्ष और आनन्द आता है । सुख वर्द्धक है, हृदय व मस्तिष्क को आनन्दमय पुष्टि देती है शुक्रमेह, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष का नाश होता है । यदि तीसरे पहर को २-३ माशा खा लेवे तो बहुत आनन्द आता है । स्तम्भक और सुखदायक है । कस्तूरी, अम्बर याकूत, जमर्रुद, मोती, सोना, चांदी केशर आदि से तैयार होती है (मूल्य ५ तोला २) नमूना १ तोला ॥)

अकसीर नं० ४५—उष विशेष अवसर पर ढीलापन होजाता है, या थोड़ी देर पीछे प्रयोग समय निर्बलता होजाती है, तो यह औषधि बहुत हितकारक है। शीघ्रपतन को भी दूर करती है। मात्रा १ माशा तक है। दैनिक सेवन के वास्ते १ माशा मात्र १माशा तीसरे पहर पर्याप्त है। शीघ्रपतन दूर होकर स्तम्भन होगा। और आवश्यकता से पहिले शिथिल होजने को लाभ होगा। मूल्य १ तोला १) नमूना ६ माशे आठ आना)

अकसीर नं० ४६, अम्बरी शिंगरफ—यह एक बहुत ही हितकर बलवर्द्धक शिङ्गरफ भस्म का योग है, जिसके भीतर केशर, कस्तूरी, अम्बरादि सम्मिलित है, और रुक्षता दूर करने के लिये दूध व नारियल विशेष विधि से मिलाया हुआ है, मात्रा अर्द्ध माशा अनुकूल पड़ने पर बढ़ाते २ दो माशा, मामूली १ माशा तीसरे पहर दूध के साथ, प्रायः पहिले ही दिन प्रभाव होता है मूल्य ३) तोला ६ माशा १॥)

अकसीर नं० ४७, पौष्टिक शीतल—यह औषधि इन लोगों के लिए है, जिनकी प्रकृति बहुत गरम है, कोई पौष्टिक गरम औषधि उनको अनुकूल नहीं आ सकती, या सोजाक का रोग था, पेशाब में जलन बाकी है, जो अभी नहीं गई, या मूत्राशय के अन्दर इतनी गरमी है कि जरा सी गरम व दवा औषधि रोग को दूर करने के स्थान में रहते हैं, सब पर कि शर्दी गर्मी है इसको दिया जाता है, प्रमेह शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, सोजाक को हितकर है, आनन्द दायक है मस्तिष्क को तर व ताजा रखती है, इससे तबियत के गरमी हट जाने और प्रमेहादि दूर हो जाने के पश्चात पौष्टिकौषधि दी जाती है, मूल्य ॥) तोला, मात्रा १ से २ माशा तक लायम प्रातः बकरी के दूध से शर्बत नीलोफर से या सबसे अच्छा दूध का पानी है तीन पाव या सेर दूध अग्नि पर रक्खें, उबाल आजाय तो इसमें एक नीम्बू निचोड़ दें, या

आध पाव पृथी डालदें पर आवेगा साफ पानी निथार लें, फनीर गढ़ जाता है वह पानी दूध का फर्क है इसमें मीठे के वास्ते शरबत मिलो फर या मिश्री मिला सकते हैं ॥

अकसीर नं० ४८—यह औषधि शुक्रमेह व स्वप्नदोष नाशक है, शरीर को मोटा करने वाली है, रंग को लाल करने वाली, शारीरिक बल को बढ़ाने वाली, आमाशय को बल देने वाली, दायम कबज को दूर करने वाली है। मात्रा १॥ माशा से लेकर ३ माशा तक जिनको कब्ज साथ हो वह दूसरी अन्य औषधियों के साथ हो खाते हैं, जिनके जरा से ख्याल से उत्तेजना होकर वीर्य निकल जाता है उनको विशेष कर के गुणकारी है। मूल्य ४) पाव, आधपाव २) रु०

अकसीर नं० ४९(गोली कस्तूरी)—यह अमीरों के वास्ते है, इसके सेवन से शीघ्रपतन दूर होता है, दो सप्ताह के पश्चात् ही देखेंगा, दुगना फरक अवश्य देखेंगे, इसके अतिरिक्त वाजीकरण है इसके चूसने से मुख में सुगंधी उत्पन्न होती है, कोई नशीली वस्तु इस में नहीं है। मात्रा १ गोली प्रातः, अनुकूल आने पर १ गोली सायंकाल को भी ऊपर से दूध पीवें, मूल्य ४ गोली १), १६ गोली ४) रुपया ३२ गोली ७) रुपया ॥

अकसीर नं० ५०—राजाओं और अमीरों के योग्य। सर्व गुण सम्पन्न। वाजीकरण तथा पौष्टिक। प्रथम दिन से ही बल वृद्धि आरम्भ होजाती है मूल्य २० गोली १६) ६ गोली ५), १ गोली तीसरे पहर को दूध से खावे, यदि पचजावे तो दूध में घृत सम्मिलित करना चाहिये ॥

अकसीर नं० ५१ (अपूर्व चिन्तामणि रस)—वाजीकरण सर्व प्रकार के प्रमेह को दूर करती है। अयावतीस नाशक वात-कफ

उद्दर वायु, दिल की कमजोरी, अरुचि, प्रमेह, शिर शूल-कर्णशूल-बहरापन, ज्वर, मगृगी, शुद्ध, प्रसूत रोग, गर्भ सम्बन्धी रोग, प्रदर, सोमरोग-त्रिदोष-क्षयरोग- इत्यादिकों का हितकर है। मात्रा सायं प्रातः एक २ गोली दूध से। मूल्य ८ गोली १) ,

अकसीर नम्बर ५२। वसन्त कुसुमाकर रस—शार्ङ्गधर का प्रसिद्ध योग—जयावतीस, सर्व प्रकार का प्रमेह का अकसीरिया इलाज है। मात्रा एक २ गोली साय प्रातः इलायची के चूर्ण और तीन माशा शहद के साथ प्रमेह - शीघ्रपतन - स्वप्नदोष - वीर्य हीनता के लिये साय प्रातः एक २ गोली दूध के साथ खावें। अम्ल पित्त के लिए एक २ गोली सायं प्रातः एक माशा श्वेतचन्दन के साथ तीन माशा मिश्री में रख कर नारयल के पानी के साथ खिलावें। यदि नारयल का पानी न मिले तो नीलोफर का अर्क वा शरबत के साथ दे दें। मूल्य नमूना ६ गोली २)

अकसीर नं० ५३—यह गोलियां विना किसी भस्म या मादक वस्तु के तय्यार की गई है। शीघ्रपतन सत्यानाश करने और पन्रेन के लिये अद्वितीय है। मात्रा एक २ गोली सायं प्रातः दूध से खावें मूल्य ४० गोली २) नमूना १० गोली आठ आना ॥

अकसीर नं० ५४—यह चूर्ण है। पुरुषों का वीर्य और स्त्रियों का दूध बढ़ाता है और उनको शुद्ध करता है। बड़ी ही उत्तम वस्तु है। शरीर का हृष्ट पुष्ट और रुधिर को शुद्ध करता है। खूनी बवासीर के खून को रोकता है। मात्रा ६ माशा प्रातः वा रात्रि को जिस समय सुभीता हो दूध के साथ, मूल्य एक पाओ २) नमूना एक छटाक ॥)

अक्सीर नं० ५५—चूर्ण है। स्वप्नदोष वालों विशेषतः विद्यार्थियों के लिये बड़ी उपयोगी वस्तु है। मस्तिष्क को उज्ज्वल और स्मरण शक्ति को बढ़ाता है। मात्रा तीन माशा सायं प्रातः दूध के साथ, मूल्य एक पाव २) नमूना एक छटांक ॥)

अक्सीर नं० ५६—यह अत्यन्त पौष्टिक है। यदि ५ माशा तोलरे पहर दूध के साथ सेवन की जाय तो एक ही दिन में अपना प्रभाव दिखलाती है। यह शीघ्रपतन दूर करने में अद्वितीय मानी गई है। इस में कोई भस्म नहीं पड़ी है। इसको हर अवस्था और हर ऋतु में सेवन कर सकते हैं। खुराक १॥ माशा प्रातः और १॥ माशा सायम दूध के साथ सेवन करना चाहिये, और प्रकृति के अनुकूल हो तो ३ माशे तक सेवन कर सकते हैं, मूल्य आध पाव का २), नमूना ॥)

अक्सीर नं० ५७—स्वप्नदोष के लिये है, विशेष कर उन लोगों के वास्ते जिनका विवाह नहीं हुआ है। खुराक ७ माशा प्रातः ७ माशा सायं पानी से। मूल्य १) की शीशी॥

अक्सीर नं० ५८ स्वर्ण आसव—हृदय व मस्तिष्क को पुष्टिदायक है और मैथुन शक्ति की वृद्धि करता है। हड्डियों इत्यादि में आतशक आदि के कारण जो पीड़ा होती है उसे दूर करता है। आतशक के तीसरे दर्जे के सब रोगों में लाभदायक है। हिस्ट्रिया मृगी आदि में भी गुणकारी है। खुराक दोनों समय भोजनोपरान्त पानी के चम्मच में। यदि स्तंभन के लिये खानी हो तो ८-८ बूंद खुराक रक्खें, और पीछे थोड़ा दूध पीवें। मूल्य २ ड्राम ४) रु०

मिलने का पता अमृतधारा लाहौर।

अक्सीर नं० ५६ (शीघ्रपतन की अक्सीर दवाई) २० दिन खाने से स्वाभाविक स्तमन होता है। मसाना रोगों के लिये अधिक लाभदायक है, मूल्य २० खुराक २॥)

अक्सीर नं० ६० (मनोहर पुष्प चूर्ण)-सन्धि पीडा, व मृगी आदि को दूर करने में बहुत उपयोगी है। यह बहुत पौष्टिक और स्तंभक है। खाने और लगाने दोनों काम में आता है। पहले ही दिन प्रभाव दिखाता है। मूल्य प्रति तोला २)

*अक्सीर नं० २७ (ब)-इसमें कस्तूरी आदि औषधियां और डाल कर अधिक स्तंभक व लाभदायक बनाया गया है। मूल्य ३२ गोली २) रु० ८ गोली ॥) है ॥

पारद गुटिका—पारा के गिलास में दूध पीने के जो गुण हैं, वह इस गोली को दूध में डाल कर पीने से है। यह गोली दूध में नहीं घुलती, और एक प्रकार की विद्युत शक्ति उसमें भर देती है। मुख में रखने से बल बढाता है। स्तम्भन होती है दूध अपना पूरा प्रभाव दिखाता है, यह पौष्टिक, व शीघ्रपतन व स्वप्नदोष को दूर करती है। इसका सेवनविधि पत्र औषधी के साथ भेजा जाता है मूल्य बडी गोली १) छोटी ॥)

गुरु शीलाजीत—शुक्रमेह, मूत्रातिसार प्रदर, प्रसून मूत्र कृच्छ, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष आदि का हितकर है। वाजीकरण है, सम्भोग के पीछे खावे तो निर्बलता दूर होती है। छाती के रोग

---

*जब कि पुस्तक बहुत सी छप चुकी थी तब यह औषधि तैयार हुई इस वास्ते अक्सीर नं० २६ के साथ पृष्ठ पर नहीं लिखी गई ॥

राजयक्ष्मा, जीर्णज्वर को हितकर है। चोट पर देने से बड़ा लाभ होता है। टूटी हुई हड्डी को जोड़ती है। इस के अतिरिक्त और बहुत से रोगों को हितकारी है। बढ़िया अकसीर है। इसकी सेवन विधि पत्र औषधि के साथ भेजा जाता है, इसे प्रायः प्रमेह, स्व नदोष सोज़ाक, कुर्ह, आदि के वास्ते वङ्ग भस्म और शुद्ध शिलाजीत में सर्व समान भाग मिला कर दिया करते हैं। ३ रत्ती सायम प्रातः दूध आदि से खिलानी चाहिये। जो लोग इसका सेवन करते हैं बहुत लाभ उठाते हैं। यह शुद्ध रक्त उत्पन्न करके, शरीर को गांठ देती है। मूल्य १ तोला १॥) साधारण ।-) तोला, और एक शिलाजीत में स्वर्ण भस्मादि मिलाकर विशेष रूप से बनाते हैं जो सर्व रोगों के नाशने और बल बढ़ाने में अद्वितीय होजाती है। मू० १०) तोला।

नोट—अकसीर नं० ७ अकसीर नं० १८ अकसीर नं० १६ अकसीर नं० २५ और अकसीर नं० २६ के वर्णन में जो भस्म संखिया शिङ्गरफ, वंग दर्जा अव्वल, त्रिवंग-भस्म और स्वर्ण भस्म दर्जा अव्वल का वर्णन होचुका, इन के अतिरिक्त

अन्य भस्में

जो कि वीर्य्य विकारों में बरती जाती हैं।

सेवन विधि इन सब के साथ भेजी जाती है। यहां लिखने से बहुत स्थान चाहिये ॥

प्रवाल भस्म-पित्त प्रकृति वालो, शुक्रमेह ग्रस्तों को दी जाती है।

सुस्ती की बडी उत्तम ओषधि है। पुरानी शिर पीड़ा, अपस्मरण, नजला, प्रतिश्याय, रक्तवमन यक्ष्मा को हितकर है। मूत्राशय की उष्मा को दूर करता है। मूत्रजलन को भी हितकर है। मूल्य १ तोला ॥) ६ माशा।)

संखिया भस्म—वातज, कफज, दोनों सन्धिवात अर्द्धांगवात, कफजकास, श्वास, कटिपीडादि को हितकर है; उत्तेजक है। मूल्य १ तोला ५), ६ माशा २॥), १॥ माशा ॥≈)

चांदी भस्म—शुक्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, हृदय मस्तिष्क व आमाशय का निर्बलता धातु क्षीणता, को हितकर है। प्रमेह, हृदय की धड़कन को भी गुणकारी है। मूल्य ३ तोला ८ रुपया ३ माशा२), नमूना १॥ माशा १)

लोहभस्मशिङ्गरफी—यह भस्म फौलाद व शिङ्गरफ के मेल से की जाती है। धातु के रोग यथा शीघ्रपतन, शुक्रमेह को दूर करके उत्तेजना को बढाती है। शुद्ध रक्तोत्पन्न करती है। यकृत को बल देती है, रंग की श्वेतता को दूर करती है। मूल्य १ तोला १॥), ३ माशा।≈)

फौलादभस्म (दर्जा अव्वल)—यह असली फौलाद की भस्म भी कई मासों मे तैयार होती है। बडी उत्तेजक है। शुद्धरक्तोत्पन्न करके, चेहरे को थोडे ही दिनों में लाल करती है। मूल्य ५) तोला ६ माशे २॥) डेढ माशा दस आना

फौलादभस्म—धातुक्षीणता, शुक्रमेह, शीघ्रपतनादि, को हित

रुद है, यकृत का उत्तेजक है रंग को लाल करती है। मूल्य १॥) रुपया तोला, ३ माशा ॥=) दस आना

लोह भस्म—यह उत्तम लोहे से सामान्य रूप से तैयार की जाती है, साधारण अवस्थाओं में वर्ती जाती है। मूल्य ॥।) तोला ३ माशा ।)

कुक्टाण्ड छिलका भस्म—श्वेतप्रदर, सोमरोग, शुक्रमेह, को दूर करती है। शीघ्रपतन को बहुत हितकर है। बहुत बढ़िया उत्तेजक है। स्त्री को खिलावे तो अतत योनि के सदृश करे मूल्य १ तोला ३) ६ माशा १॥) रु०, १॥ माशा ।=)

मण्डूर भस्म—यकृत रोग, कामलो पाण्डु रोग, शोथ, ज्वर मूत्राशय की निर्बलता को हितकर, और शीघ्रपतन को भी जब कि होजावे, शक्ति की निर्बलता के कारण से तो, बहुत गुणकारी है। मूल्य १ तोला १॥), ३ माशा ।=)

सीसा भस्म (दर्जा अव्वल)—यह पीत रंग की सीसा भस्म अत्युत्तम है। वाजी करण है वीर्य्य के सर्व रोगों को हितकर है। मूत्र कृच्छ और सोजाक, कुरंह कोभी हितकर है। उचित अनुपान से सर्व रोगों में दी जाती है। कफज रोग खांसी संग्रहणी बवासीर, को दूर करती है। काम देव की वृद्धि करती है। मूल्य १ तोला १०) रुपया, ३ माशा २॥ रुपया, १ माशा१) रुपया ॥

सीसा भस्म—मूत्रकृच्छ के वास्ते हितकर है। कुरंह को भी गुणकारी है। मूल्य १ तोला १॥), ३ माशा ।=)

बङ्ग व पारद मिश्रित भस्म—उत्तेजना शक्ति को बढ़ाती है शुक्रमेह शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, को गुणकारी है। १० प्रकार का प्रमेह.

श्लेष्म रोगादि को दूर करती है। मोतियाबिन्द को हितकर है। मूल्य १ तोला ८) ३ माशा २), १॥ माशा १) रु०

नाग भस्म—वाजीकरण है। कफज व वातज रोगों का मूलोच्छेद करती है, कम्पवातआदि को दूर करती है। जलोधर को हितकर है। मूल्य श्वेत रंग का ८) तोला, ३माशा २), १॥ माशा १) रु० है। और कृष्ण रंग २) तोला ३ माशा ॥) आना

अनविंघमोतीभस्म, (मरवारीद नासुफता)—हृदय, यकृत, मस्तिष्क को बलदायक, शीघ्रस्तन, स्वप्नदोष, शुक्रमेहादि निवारक है। मूल्य ३० रु० तोला, ३ माशा ७॥), ४ रत्ती १।)

रस सिन्दूर—वैद्यक की प्रसिद्ध औषधि है। यह रसायन है, उत्तेजक है, इसकी वैद्यक ग्रन्थों में बड़ी प्रशंसा लिखी है। बुभुक्षित पारा से तैयार कृत का मूल्य २०) तोला है। और शुद्ध पारद से तैयार कृत का मूल्य १० रु० तोला, शिंगरफ से निकाला हुआ पारा से तैयार कृत, ५) रु० तोला है॥

चन्द्रोदय—यह एक प्रकार का रस सिन्दूर सोना मिश्रित है। सर्व औषधियों का राजा है। न केवल धातु सम्बधी सर्व रोगों की सर्वोत्तम औषधी है परन्तु उचित अनुपान से प्रत्येक रोग में वर्ता जाता है। कई वर इस से बस गए है। बुभुक्षित पारा से तैयार कृत का मूल्य १००) तोला, शुद्ध पारद से तैयार कृत ५०) रु० तोला है॥

तिला (लिंग तैल)

विशेषकर उन लोगों के वास्ते जो अपने हाथों अपना सत्यानाश कर चुके हों पुष्टिकारक औषधि के साथ २ तिला (लिंग तैल) का होना भी आवश्यक है। परन्तु स्मरण रहे, कि अकेला तिला बहुत कम लाभ करता है। वाह्यक मालिश से नसों पट्ठों की सुस्ती दूर होकर चैतन्यता आती है. परन्तु जब तक आंतरिक बल की उत्पत्ति न हो, इस से कुछ नहीं हो सक्ता। तिला हमारे यहां बहुत प्रकार के तैयार होते रहते हैं। दो चार का नीचे वर्णन करते हैं।

तिलाओं की साधारण सेवन विधि यह है कि—रात अथवा दिन के समय थोडा सा तेल लेकर उंगली से धीरे २ मालिश करें यहां तक कि तेल भीतर सोख जावे तेल को ऊपर चमडे पर लगाना चाहिये निचली सीवन नर्म होती है उसको बचाना चाहिये और जिनके खुतना होता है उनको सुपारी (लिंगमुख) भी बचाना चाहिए केवल ऊपर की खाल पर लगाना चाहिए। अण्डकोष और प्रत्येक कोमल जगह बचाना चाहिए। क्योंकि अन्य स्थानों पर लगाने से घाव होजाता है। तेल मालिश करने के पश्चात भोजपत्र परिण्ड पत्र, या पान का पत्र बांध दे। यदि भूल से अण्डकोष आदि पर लग कर घाव हो जायें तो घृत अथवा मक्खन के लगाने से यह कष्ट दूर हो सक्ता है तिला सेवन पर्यन्त इन्द्रियों में जल न लगने देना चाहिए। यदि स्नान करना हो तो तेल से भीगा हुआ लंगोट बांध रक्खें ताकि पानी ऊपर ही से बह जाय। किंचित लग जाय तो परवाह भी नहीं। तिलाओं को ७ दिन लगाकर ७ दिन छोडना चाहिए इसी प्रकार जब तक आशा पूर्ण नहीं करना चाहिए ॥

त्रिला नं० १—कुछ सुगन्धि युक्त है। बूढ़ों को भी स्वच्छ बना देता है, बूढ़ों को विशेष रूप से गुणकारी है। हस्त मैथुन के शिथिल क्रमों को और जो शीघ्रिया बल बढ़ाना चाहे, यह तिलो लाभदायक है। नसों पट्ठों को बल देता है। साधारण फुन्सियां सी होती हैं कोई कष्ट नहीं होता। मूल्य ४ डराम ५), १ डराम १।)

तिला नं० २—यह तेज नहीं है और लग जावे तो डर नहीं है। हस्त मैथुन वालों को बिना उपाद के बडा लाभ पहुंचाता है। मूल्य २ डराम१) एक रु०, नमूना ।) चार आना।

तिला नं० ३, तिलायमहल—हस्तमैथुन करनेओं को विशेष रूप से गुणकारी है। साधारण अवस्थाओं में बहुत लाभ पहुंचाता है। साधारण फुन्सियां होती हैं। विशेष कष्ट नहीं। मूल्य ४ डराम १) नमूना =)

तिला नं०४.तिलाय मायूसीन—यह बडाप्रचण्ड है। चर्म का एक परत उतार देताहै। परन्तु हस्तकार्य की नलो, पट्ठों का बहुत शीघ्र ठीक करता है। ४ दिन के सेवन से ही बल प्रतीत होता है। किन्तु खाने की अच्छी औषधी भी साथ हो क्योंकि तिलाओं के साथ पौष्टिक औषधि का सेवन करना आवश्यक है। निराश रोगियों को इस से बहुत लाभ हुआ है, शिथिलता, ध्वजभंगता, नपुंसकता दूर करके पूरा बल प्रदान करता है। इस को च्यार बून्द को मालिश करके पान का पत्ता बांध दिया करें। ४ दिन के भीतर ऊपर का चर्म उतर जावेगा फिर भीतर से नया चर्म आता है, जो बलवान होता है। बहुत ज्यादा कष्ट नहीं होता अधिक कष्ट अनुभव करेंगे तो मक्खन लगाने से शान्ति होती है ४ दिन के पीछे ७ दिन छोड कर फिर लगावें, इसी प्रकार दो चार बार करें। मूल्य २ डराम ३), नमूना ।।।)

मिलने का पता—अमृतधारा लाहौर

तिला नं० ५—यह परत वरत कुछ नहीं उतारता न बहुत फुन्सी होती है, जरा सी बूटी सी कभी निकलती है, कभी नहीं निकलती है परन्तु जोश तिला नं० ४ से कम नहीं करता है। १० दिन के लगाने से नामर्द मर्द होता है। मूल्य ४डराम ४) नमूना १ डराम १)

तिला नं० ६ (लिंगवर्द्धक)—इस के लगाने से लम्ब और स्थूल होता है, तीव्र नहीं है, बहुत सा लगाना चाहिए गाढ़ा लेप होना चाहिए, इस में हींग ½ भाग मिलालें तो और भी उत्तम है। मूल्य ४) रुपए आधी शीशी २) रुपए नमूना ।।)

तिलाय नं०७ (उत्तेजनावर्द्धक),—आवश्यकता से १ घण्टा प्रथम लगाया जाता है, उस दिन अधिक बल आता है। सुखदायक भी है, जिसने एक बार भी आजमाया प्रसन्न हुआ, अर्द्ध या १ माशा लेकर ६ माशा मधुमें मिलाकर. पर लगाकर कागज आदि देकर ऊपर बांध दे, एक घंटा पीछे धोडालें, समय पर खूब बल मालूम होगा शक्ति बढ़ जावेगी। मूल्य १ तोला ५), ६ माशा २।।) नमून १ माशा ।।)

तिलाय नं० ८ अत्यानन्द दायक (मुलज़िज़ शाही)-इसकी प्रशंसा क्या करें, जिसने एकबार भी आजमाया वहपर मोहित हुआ, अत्यन्त आनन्द दायक, अत्यन्त सुगंधि युक्त, जहां हो महक आवे एक चावल पर्याप्त है। १चावल से १रत्ती तक सुपारी पर लगावें यदि अधिक इच्छा हो तो १-२ चावल ऊपर भी लगावें, परन्तु अधिक लगाने से स्त्री को जलन होती है। एक दो बार में स्वयं अन्दाजा हो जायेगा, कि कितना लगाना चाहिये। अम्बर, कस्तूरी केशर, इतर जैसी औषधियां है। इसलिए सुगंधि के निमित्त का

का हो जगा सकते हो। मूल्य १ तोला १२), ३ माशा ३), नमूना १ माशा १=)

तिलाय, नं० ९ (आनन्द दायक)—यह भी अत्यन्त आनन्द दायक है, दोनों को आनन्द देवे है। द्रावक भी है। एक गोली शुद्ध अथवा मधु में घिसकर एक घंटा पहिले लेप करें, और लगा रहने दें। मूल्य ३२ गोली २), १६ गोली १), नमूना।),

नं० १० लेप पौष्टिक व स्तम्भक—यह लेपन बलदायक है, लम्बाई और स्थूलता प्रदान करताहै, परन्तु स्तम्भनकारी है। जो लोग स्तम्भन की औषधि खाना पसंद नहीं करते, उनके काम की वस्तु है। स्तम्भन के वास्ते डेढ माशा के लगभग लेप करके बांध दें, एक घंटा पीछे पोंछ दें। रोग निवृत्ति के लिये रात को लगाकर प्रातः पोंछ दिया करें या गरम पानी से धो दिया करे। मूल्य १ तोला १ रु० नमूना।), चारमाना

लेप नं० ११, (कामनी द्रावक)—न० ८ के गुण हैं वह अमीरों का है तो यह गरीबोंको। एक आध माशा न० ८ की तरह लेप करके कार्य्य में प्रवृत्त हो लगभग वही गुण हैं। मूल्य १), आधी तोली ॥),

तिला नं० १२—इस का नाम तिला अशरी यह तिला नं० ४ की भांति तेज है दो तीन चावल भर लेकर मालिश करें, और ऊपर पान के पत्ते बान्ध दिया करें और बहुत ही सावधान रहें। पहले ही दिन शक्ति प्रतीत होगी। अधिक कष्ट हो तो मक्खन लगा दें, चार दिन लगा कर सात दिन छोड दिया करें, जो तकलीफ सहन कर